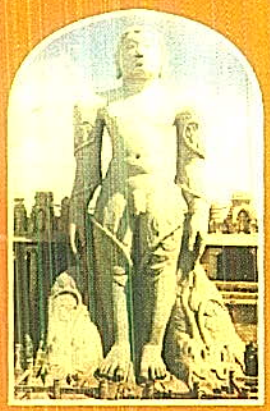

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

VOLUME : IV | ISSUE : 12 | MUMBAI, JUNE 2014 | PAGES : 40 | PRICE :₹25

प्रभाषगिरि क्षेत्र पर स्थित तीर्थंकर भगवान श्री 1008 पद्मप्रभ जी

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 260101-10, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

अध्यक्ष की कलम से

साधर्मी भाईयों एवं बहनों,

सादर जय जिनेन्द्र,

विगत माह में हम सभी ने राजनैतिक-प्रजातांत्रिक सरगर्मी के अनेक रूप देखे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पहली बार प्रजातंत्र की चुनाव प्रक्रिया में देशवासियों ने जात-पात, धर्म संप्रदाय, अमीर-गरीब, की सोच से ऊपर उठकर 'विकास' को लक्ष्य बनाकर अपना वोट दिया। सारे पुराने समीकरण अस्वीकार कर दिये। रोजी-रोजगार के मूल भूत अधिकारों की सहजता को अंगीकार करने के लिये, भ्रष्टाचार के विरोध में 'सुशासन' लाने के लिये दिल खोलकर अपना मत व्यक्त किया। ऐसा महसूस हुआ कि सही अर्थों में कर्त्तव्य और कार्य क्षमता की लगन को जनता ने बहुमान दिया हो।

गांव से लेकर नगरों-महानगरों तक छोटे-छोटे कामगारों से लेकर उद्योगपतियों तक, विद्यार्थियों से लेकर विद्वानों तक, साधारण महिला से लेकर अभिनेत्रियों तक, किसानों से लेकर नौकरशाहों तक सभी की आशायें जाग उठी हैं। वर्तमान सरकार से अपेक्षायें बहुत अधिक बढ़ गई है, कि अच्छे दिन आने वाले हैं।

सड़कों में सुधार होगा। जीवनदायिनी नदियों में प्रदूषित जल-मल-गंदगी का बहाया जाना थम सकेगा। बिजली उत्पादन एवं वितरण में गुणवत्तापूर्ण सुधार होगा। कचहरी, अस्पताल, शासकीय कार्यालयों में, दफ्तरों में कार्यक्षमता बढ़ेगी। और सबसे ऊपर निष्क्रियता एवं भ्रष्टाचारियों पर अंकुश लग सकेगा। मंहगाई की मार से जन सामान्य को राहत मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा को उचित सम्मान मिल सकेगा। जन साधारण के जीवन स्तर में सुधार परिलक्षित होने के संकेत मिल सकेंगे।

'क्या यह सब पलक झपकते ही, केन्द्र सरकार के पदासीन होते ही - घोषणाओं से संभव होगा या हम सबको भी अपने-अपने स्तर पर नीतिगत योगदान देने हेतु संकल्पित होना होगा? चिंतन जरूरी है'।

एक नई दिशा, एक नई सोच एक नई शुरुआत, एक नये राष्ट्रीय संकल्प के लिये संपूर्ण जैन समाज श्री नरेन्द्र मोदीजी एवं उनके जैसे दृढ़ निश्चय वाले सहयोगियों को बहुत-बहुत बधाई प्रेषित करते हुए नैतिक समर्थन व्यक्त करता है।

इसी तारतम्य में 9 मई 2014 को श्री कुंडलपुर जी सिद्धक्षेत्र (दमोह-म.प्र.) में बड़े बाबा के निर्माणाधीन विशाल मंदिरजी से संबंधित मुकदमें

धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है।

का फैसला माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिया गया। इस ऐतिहासिक, बहु प्रतिक्षित निर्णय से पूरे देश-विदेश में हर्ष की लहर दौड़ गई। ऐसा फैसला जिसका इतिहास में दूसरी मिसाल नहीं मिलेगी।

जैन धर्म की मूल आम्नाय तथा मूर्तिपूजा के भावनात्मक एवं आध्यात्मिक पहलू की पुनः व्याख्या कर विजय पताका आकाश में फहरा गई। अंध विश्वासों एवं कर्मकांडों की भूल भुलैया से निकलकर जिनबिम्ब की महिमा, जर्जर ईंट चूने की परिधियों को लांघकर सर्व व्यापी, सार्वभौमिक स्वरूप को प्राप्त हो सकी। अनेक वर्षों की मुकदमें बाजी से चंद पदलोलुप, दंभी लोगों की पैंतरेबाजी से पूरे समाज को, लाखों भक्तों को राहत मिली।

हम सभी नतमस्तक हैं उन महाश्रमण आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज श्री के आशीर्वाद के....। आचार्यों और मुनिराजों के जप के एवं कुंडलपुर कमेटी के कर्मठ पदाधिकारियों के जिनके पुरुषार्थ एवं प्रयत्नों से यह स्वर्णिम-ऐतिहासिक सफलता सर्वोच्च न्यायालय से हमें प्राप्त हो सकी। यह निर्णय धर्म मंदिर एवं मूर्तियों की उपासना हेतु समय समय पर आवश्यक परिवर्तनों के परिपेक्ष्य में, निर्माण में, जीर्णोद्धार में हमेशा सर्वोपरि उदाहरण सिद्ध होगा (आने वाले वर्षों में)।

बस अब तो यही अभिलाषा है कि बड़े बाबा का अतिशयकारी, विशाल गगनचुंबी, शिखरयुक्त मंदिर शीघ्र-अतिशीघ्र बनकर पूर्ण हो एवं देश-विदेश के लाखों करोड़ों श्रद्धालु एक साथ हजारों की संख्या में दर्शन पूजन विधानकर अपने जीवन को धन्य कर सकें। बड़े बाबा के विराट स्वरूप में दर्शन कर आत्मा की और जिन भक्तों की आने वाली पीढ़ीयां हजार वर्षों तक बड़े बाबा की छत्र छाया में आत्म धर्म की पताका फहरा सकें।

जिनकी लेखनी कुंडलपुर के विरोध में एवं महाश्रमणों को इंगितकर पत्र-पत्रिकाओं में असंयत हो यदा कदा चलती रहती है, उन्हें ऐतिहासिक निर्णय को आत्मसात कर भावों में भक्तिरस प्रवाहित कर जिनधर्म की इस विजय को सहृदयतापूर्वक अंगीकार करें एवं नवनिर्माण में भागीदार बनें।

भगवन तुमको कैसे पाऊँ
पास मेरे सिर्फ भक्ति का धन है
पापों से कलुषित जीवन है
तपश्चरण का नाम सुना है
लेकिन 'तप' की राह कठिन है
पावों में माया की बेड़ी
कैसे अपने कदम बढ़ाऊँ
बड़े बाबा तुम्हें कैसे ध्याऊँ
भगवन तुमको कैसे पाऊँ
इसी शुभ भावना के साथ

आपका ही

सुधीर जैन

धर्म धारण करने की चीज है, उदाहरण की नहीं।

तीर्थक्षेत्र संरक्षण हेतु अपेक्षित सहयोग

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का तीर्थक्षेत्र संरक्षण का इतिहास शताधिक वर्षों का है जिसे उत्तरोत्तर विकास की ऊँचाईयों तक ले जाने की अपेक्षा है। हमारे धर्म और धर्मायतन की परिधि के केन्द्र में तीर्थंकर और तीर्थ हैं। यह जीव को संसार से पार उतारने में समर्थ हैं साथ ही संसार में रहने वाले लोगों के लिए सुख एवं शान्ति का संदेश देते हैं। इन तीर्थों का संरक्षण होना चाहिए, विकास होना चाहिए और जन–जन इनसे जुड़े ऐसे कार्य होना चाहिए। तीर्थ शांति के संवाहक हैं, प्रकृति से इनकी निकटता स्थापित है। अतः इनकी उपेक्षा अपने सुख की उपेक्षा है। हमारे लिए तो हर हाल में तीर्थ वंदनीय ही हैं, चाहे वे सिद्धक्षेत्र हों या अतिशयक्षेत्र।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष सवाई सिंघई श्री सुधीर जैन की हार्दिक इच्छा है कि भारतवर्ष के समस्त तीर्थक्षेत्रों की सुरक्षा हो, उन तक पहुँचने के आवागमन के साधन उपलब्ध हो और सभी तीर्थों पर यात्रियों के ठहरने आदि की समुचित सुविधा उपलब्ध हो। हमारे लिए तीर्थक्षेत्रों से संबंधित राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकार से सहयोग लेकर तीर्थक्षेत्रों पर सड़क, पानी, विद्युत तथा सुरक्षा आदि की व्यवस्था बनाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। यहाँ विधानादि, मेला, रथोत्सव आदि के विशेष आयोजन समय–समय पर होना चाहिए ताकि तीर्थ यात्री इन निमित्तों के कारण भी तीर्थवंदना के लाभ को प्राप्त करें। वसुनन्दी श्रावकाचार (गाथा–452) में क्षेत्रपूजा के विषय में कहा है कि–

जिणजम्मण णिक्खमणे णाणुप्पत्तीए तित्थतिण्हेसु।
णिसिहीसु खेत्तपूजा पुव्वविहाणेण कायव्वा।।

अर्थात् जिन भगवान् की जन्मकल्याणक भूमि, निष्क्रमण (तप) कल्याणक भूमि, केवलज्ञानोत्पत्ति स्थान, तीर्थ चिह्न स्थान और निषीधिका अर्थात् निर्वाण भूमियों में पूर्वोक्त विधान से ही हुई पूजा क्षेत्रपूजा कहलाती है।

तीर्थक्षेत्रों के विकास की अवधारणा को ध्यान में रखकर ही भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री सुधीर जैन ने अध्यक्ष पद संभालते ही परम पूज्य आचार्यों से शुभाशीर्वाद प्राप्त किया और सम्मेदशिखर, श्रवणबेलगोला, चाँदखेड़ी, कुण्डलपुर, महावीर जी, पद्मपुरा, सांगानेर, आवा, ईशुरवारा, नेमावर, अंतरिक्ष पार्श्वनाथ–शिरपुर आदि तीर्थक्षेत्रों की वंदना की और जहाँ जैसी आवश्यकता है उसको समझा और अपने सहयोग की वचनबद्धता दोहरायी। उनके इन तीर्थों पर प्रत्यक्ष पहुँचने से तीर्थक्षेत्र कमेटी और तीर्थों के बीच निकटता के एक नए अध्याय की शुरुआत हुई है। इससे विकास के नए आयाम स्थापित होंगे।ऐसा मेरा विश्वास है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महामंत्री श्री पंकज जैन ने तीर्थक्षेत्रों के विकास हेतु जो अपील की है वह एक व्यावहारिक कदम है। समाज को इनके प्रति सकारात्मक एवं सहयोग पूर्ण रुख अपनाना चाहिए। तीर्थक्षेत्रों पर कार्यरत प्रबंध समितियों को चाहिए कि वह सबसे पहले अपने तीर्थों की सुरक्षा हेतु विशेष प्रबंध करें। इसके लिए तीर्थक्षेत्रों की चार दीवारी (परकोटा) अवश्य बनवाना चाहिए। इस दिशा में परमपूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज की प्रेरणा से बिजौलियां, चाँदखेड़ी, सांगानेर आदि के विकास को हम मानक मानकर अपना सकते हैं। इसी के साथ यह भी जरूरी है कि तीर्थक्षेत्र परिसर में दूषित खान–पान पूरी तरह से प्रतिबंधित हो ताकि जैनतीर्थ जैन आचार–विचार की शिक्षा भी दे सकें। शासन से भी मांग होना चाहिए कि प्रत्येक तीर्थक्षेत्र मांस,मदिरा आदि के विक्रय एवं सेवन से मुक्त हो। नियम विरुद्ध आचरण होने पर दण्डात्मक कार्यवाही की व्यवस्था होना चाहिए। हमें खान पान में शुद्धता रखना चाहिए तथा अभक्ष्य पदार्थों को तीर्थ परिसरों में आने से रोकना चाहिए। हम तीर्थक्षेत्रों के प्रति तन–मन–धन से समर्पित हों; यही श्रेयस्कर है।

–डॉ.सुरेन्द्रकुमार जैन

वात्सल्यपूर्ण व्यवहार ही धर्म है।

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 4 अंक 12 जून 2014

परामर्श मण्डल

डॉ. सुरेन्द्र जैन 'भारती', बुरहानपुर
डॉ. नीलम जैन, पुणे
श्री संजय जैन 'मैक्स', इंदौर
श्री श्रीकिशोर जैन, दिल्ली

संपादक

उमानाथ आर. दुबे

कार्यालय

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन : 022-2387 8293 फैक्स: 022-23859370

e-mail : tirthvandana4@yahoo.com
e-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : www.digamberjainteerth.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210100017881 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

तीर्थक्षेत्र संरक्षण हेतु अपेक्षित सहयोग	5
षष्टम तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी	7
जैनधर्म के छठवें तीर्थंकर भगवान् श्री पद्मप्रभ स्वामी	13
आचार्य श्री वर्धमानसागर जी : व्यक्तित्व और कृतित्व	16
24 तीर्थंकरों के 120 कल्याणक 24 स्थानों पर हुए	18
बड़े बाबा कुण्डलपुर का मैं भी छोटा भक्त हूँ	19
धर्म महोत्सव के साथ तीर्थक्षेत्र	20
श्री प्रमोद कासलीवाल, औरंगाबाद महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष निर्वाचित	23
अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है	24
कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र के बारे में उच्चतम न्यायालय का निर्णय	27

इंदौर (म.प्र.) में क्षेत्र प्रतिनिधि सम्मेलन का आयोजन

देश के सभी सम्बध्द तीर्थक्षेत्रों के अध्यक्षों, मंत्रियों एवं क्षेत्र प्रतिनिधि सदस्यों को यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि क्षेत्र प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन रविवार दिनांक 27 जुलाई, 2014 को इंदौर (म.प्र.) में आयोजित किया जा रहा है। जिसकी सूचना आपको अलग से प्रेषित की जा रही है। आपके क्षेत्र के पते पर 12 पृष्ठों का एक सर्वेक्षण फार्म भी भेजा जा रहा है जिन क्षेत्रों ने इस फार्म को भरकर अभी तक नहीं भेजा है उनसे निवेदन है कि वे इसे भरकर अपने साथ इंदौर अवश्य लाएं अथवा श्री सुनील जैन 'शिवम' चेयरमेन-'तीर्थक्षेत्र सुरक्षा, सर्वेक्षण एवं विकास समिति' को उनके पते 116-ए, शिवम् एन्क्लेव, ईस्ट एंड क्लब के पास, दिल्ली-110032 पर भिजवा देवें।

इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की पदाधिकारी परिषद एवं ट्रस्ट मंडल की बैठकें भी इंदौर में रखी जा रही है। सम्मेलन में आप सभी की उपस्थिति प्रार्थनीय है।

पंकज जैन
महामंत्री

संपर्क सूत्र- 1. श्री विमल कुमार जैन(सोगानी), अध्यक्ष- मध्यांचल समिति.
19 नेमिनगर एक्सटेंशन, जैन कॉलनी, इंदौर-452009.मोबा.09826027577
2. प्रबंधक- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी,
हीराबाग, सी.पी. टैंक, मुंबई - 400 004.मोबा.09833671770

धन के लिए धर्म नहीं होता, धर्म के लिए धन होता है। जहां धर्म है वहीं धन है।

धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले जैन धर्म के षष्टम तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी

- ध्रुव कुमार जैन, कटरा मेदनीगंज, प्रतापगढ़(उ.प्र.)

धर्म तीर्थ का प्रवर्तन करने वाले तीर्थंकर कहलाते हैं। वर्तमान चौबीस तीर्थंकरों की परम्परा में छठे तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ जी हैं, जिनका जन्म कौशाम्बी में हुआ था। पंचम तीर्थंकर श्री सुमतिनाथ जी के मोक्ष जाने के नब्बे हजार करोड़ सागर बीत जाने के पश्चात भगवान श्री पद्मप्रभ जी का जन्म इस पावन भारतभूमि पर हुआ। इनकी जीवन गाथा आरम्भ करने से पूर्व इनके पूर्व भव पर संक्षिप्त चित्रण आवश्यक है।

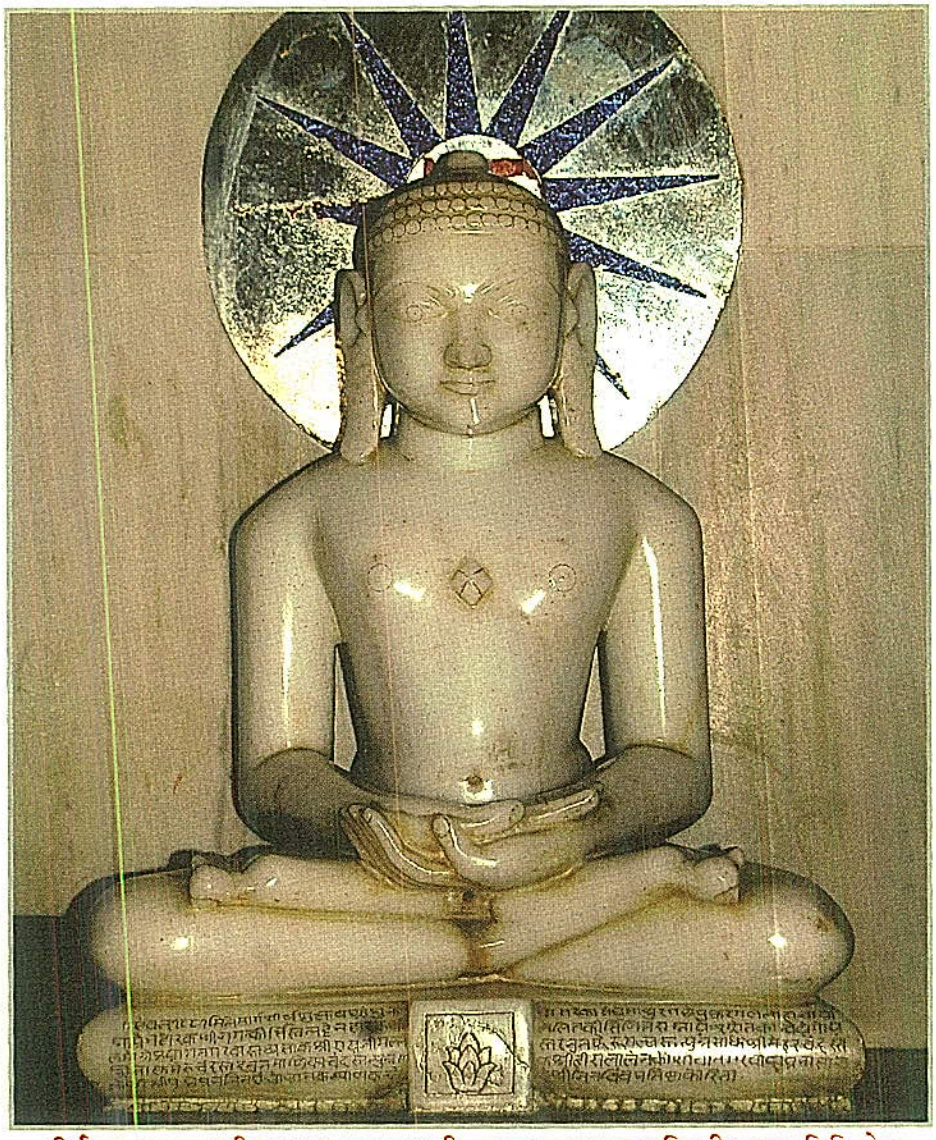

तीर्थंकर भगवान श्री 1008 पद्मप्रभजी, तप कल्याणक भूमि श्री प्रभासगिरि क्षेत्र

घातकी खंड द्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के दक्षिण तट पर एक वत्स देश था। उसमें सुसीमा नामक एक नगर था। उसके अधिपति महाराज अपराजित थे। उनके राज्य में प्रजा खूब सुखी और समृद्ध थी। उन्होंने बहुत समय तक सांसारिक सुखों का आनंद लिया। एक दिन उनके विचार में आया कि संसार में समस्त पर्याय क्षणभंगुर है। सुख पर्यायों द्वारा भोगे जाते हैं। पर्याय नष्ट होने पर वह सुख भी नष्ट हो जाता है। अतः संसार के सम्पूर्ण सुख क्षण भंगुर है। यह विचार कर उन्होंने पिहिताश्रव जिनेन्द्र के पास जाकर जिन-दीक्षा ले ली। उनके चरणों में उन्होंने ग्यारह अंगों का अध्ययन और षोडशकारण भावनाओं का चिंतन करके तीर्थंकर प्रकृति का बंध कर लिया। आयु के अंत में समाधिमरण करके 'उर्ध्वग्रैवेयक के प्रीतिकर विमान में अहमिन्द्र' हुए।

भगवान पद्मप्रभ जी के वर्तमान भव का वर्णन यहाँ से आरम्भ होता है। कौशाम्बी नगरी में इक्ष्वाकुवंशी काश्यपगोत्री महाराज धरण का शासन था। उनकी महारानी का नाम सुसीमा था। जब उक्त अहमिन्द्र का जीव उनके गर्भ में आने वाला था, तब उसके पुण्य प्रभाव से गर्भावतरण से छः माह पूर्व से देवों ने महाराज धरण के नगर में रत्न वृष्टि करना आरम्भ किया जो भगवान के जन्म लेने तक बराबर चलता रहा। माघ कृष्णा षष्टी के दिन ब्रह्म मुहूर्त में जब चित्रा नक्षत्र और चन्द्रमा का योग हो रहा था, महारानी सुसीमा ने सोलह स्वप्न देखने के बाद अपने मुंह में एक हाथी को प्रवेश करते हुए देखा। महाराज धरण से स्वप्नों का फल जानकर महारानी सुसीमा बड़ी हर्षित हुई। देवों ने भी कौशाम्बी नगरी आकर गर्भ कल्याणक का खूब उत्सव मनाया।

नौ माह बाद कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन मघा नक्षत्र में लाल कमल की कलिका के अमान कांति वाले पुत्र को महारानी सुसीमा ने जन्म दिया। पुत्र असाधारण था, लोकोत्तर कांति थी, अद्भुत प्रभाव था। भगवान के जन्म होते ही क्षणभर के लिए तीनों लोकों के जीवों को सुख का अनुभव हुआ। उसी समय सौधर्म इन्द्र अन्य इन्द्रों और देवों के साथ आये और बाल भगवान को लेकर सुमेरु पर्वत पर जा पहुंचे। वहाँ क्षीर सागर के जल से उनका अभिषेक किया, फिर वापस लाकर माता-पिता को सौंपकर आनंद मग्न होकर नृत्य किया और 'आनंद' नाटक खेला। बालक के शरीर की प्रभा पद्म (कमल) के समान थी, इसलिए इन्द्र ने इनक नाम पद्मप्रभु रखा। भगवान पद्मप्रभ बाल-इन्दु के समान प्रतिदिन बढ़ने लगे। उनकी बाललीलाएं देखकर माता-पिता का हृदय खुशी से फूल उठता था। भगवान जन्म से ही मति श्रुति और अवधि ये तीन ज्ञान के धारी थे और वे जैसे-जैसे बढ़ते जाते थे, वैसे-वैसे उनमें अनेक गुण निवास करते जाते थे। इनकी कुल आयु तीस लाख पूर्व की थी और शरीर की ऊँचाई 250 धनुष थी।

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

जब आयु का चौथाई भाग अर्थात साढे सात लाख पूर्व वर्ष बीत गये, तब महाराज धरण पद्मप्रभु को राज्य देकर आत्मकल्याण की ओर प्रवृत्त हो गये। उनके शासन काल में कोई दुखी नहीं था, सभी सम्पन्न और निर्भय थे। सुन्दर-सुशील कन्याओं के साथ उनका विवाह हुआ था। वे धर्म-अर्थ और काम का समान रूप से पालन करते थे।

एक दिन अपने दरवाजे पर बंधे हुए हाथी की दशा देखकर उन्हें वैराग्य हो गया और पूर्व भवों को याद कर नश्वर शरीर और संसार की क्षणभंगुरता पर विचार करने लगे। उसी समय लौकान्तिक देवों ने मुक्त कंठ से वैराग्य की प्रशंसा की और भगवान की इस मनोहर विचार धारा को हृदय से सराहा। देवों ने दीक्षा कल्याणक का उत्सव मनाया। तब भगवान पद्मप्रभ अपने पुत्र को राज्य सौंप कर देवनिर्मित 'निर्वृत्ति' नामक पालकी पर आरुढ़ होकर पभौसा गिरि के मनोहर वन में पहुंचे और वहां बेला का नियम लेकर कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी को संध्या समय चित्रा नक्षत्र में दीक्षा ले ली। उनके साथ एक हजार राजाओं ने भी मुनि-दीक्षा ले ली।

भगवान के दीक्षा कल्याणक का विवरण 'तिलोयपण्णत्ति' में इस प्रकार मिलता है -

चैत्तासु किण्ड तेरसि अवरण्हे कत्तियस्स णिक्कंतो।
पउमप्पहो जिणिंदो तदिए खवणो मणोहरुज्जाणे।।4।649।।

अर्थात पद्मप्रभ जिनेन्द्र कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के अपराह्न समय में चित्र नक्षत्र में मनोहर उद्यान में तृतीय भक्त के साथ दीक्षित हुए।

दूसरे दिन भगवान 'वर्धमान नगर' में चर्या के लिए पहुंचे। वहाँ राजा सोमदत्त ने उन्हें आहार-दान देकर अक्षय पुण्य अर्जित किया। देवों ने भगवान के आहार-दान के उपलक्ष्य में पंचाश्चर्य किये। भगवान छह माह तक मौन रहकर विविध प्रकार के तप करते रहे।

उन्होंने चैत्र शुक्ला पूर्णमासी के दिन दोपहर में चित्र नक्षत्र में शिरीष वृक्ष के नीचे चार घातिया कर्मों का क्षय कर केवलज्ञान प्राप्त किया। कुबेर ने आकर समवसरण की रचना की। इन्द्रों और देवों ने आकर भगवान की पूजा की। भगवान ने पभौसा गिरि पर प्रथम उपदेश देकर तीर्थ प्रवर्तन किया।

आचार्य गुणभद्र ने लिखा है कि उनके समवशरण में वज्र, चामर आदि एक सौ दस गणधर थे, 2300 द्वादशांग के वेत्ता थे, 2,69,000 शिक्षित उपाध्याय थे, 1000 अवधि ज्ञानी थे, 12000 केवलज्ञानी थे, 10300 मनःपर्यय ज्ञानी थे, 16800 विक्रिया ऋद्धि के धारी थे और 9600 उत्तरवादी थे। इस तरह कुल मिलाकर 3,30,000 (तीन लाख तीस हजार) मुनिराज थे। रतिषेण आदि को लेकर चार लाख बीस हजार आर्यिकायें थे। तीन हजार श्रावक, पांच लाख श्राविकायें, असंख्य देव-देवियां और असंख्यात तिर्यंच थे।

भगवान बहुत समय तक विहार करके जीवों को सन्मार्ग का उपदेश देकर उन्हें सन्मार्ग में लगाते रहे। जब आयु में एक माह शेष रह गया तब भगवान सम्मेदशिखर पहुंचे और उन्होंने योग-निरोध कर प्रतिमा योग धारण कर लिया। अंत में फाल्गुन कृष्णा चतुर्थी की संध्या को चित्रा नक्षत्र में जन्म मरण की परम्परा सर्वदा के लिए नष्ट कर दी और वे संसार से मुक्त हो गये। उनके साथ एक हजार मुनि भी मुक्ति पधारे। देवों और इन्द्रों ने आकर निर्वाण महोत्सव मनाया।

भगवान पद्मप्रभ की गर्भ और जन्म भूमि कौशाम्बी जो वर्तमान में इलाहाबाद से लगभग 6 किमी. पर अवस्थित है और जो कभी जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा, यह कैसी विधि की विडम्बना है कि आज यहां जैन का एक भी घर नहीं है। यहां केवल लाला प्रभुदास जी आरावालों का बनवाया हुआ एक दिगम्बर जैन मंदिर और एक जैन धर्मशाला है।

मंदिर में दो वेदियाँ हैं एक में भगवान पद्मप्रभ की प्रतिमा और चरण हैं और दूसरे में एक शिलाफलक खडगासन प्रतिमा अंकित है। मंदिर में और भी मूर्तियां हैं। क्षेत्र अविकसित और साधन विहीन है।

भगवान पद्मप्रभ की तप और केवलज्ञान कल्याणक भूमि प्रभाषगिरि जो कौशाम्बी से लगभग 10 किमी. दूर पर अवस्थित है, अवश्य ही एक तीर्थक्षेत्र के रूप में हमें आमंत्रित करता रहता है। यहां पहाड़ी पर भगवान पद्मप्रभ की एक कांच का मंदिर है और तलहटी में भी भगवान पद्मप्रभ जी का तीन विशाल मंदिर है जो धर्मशाला क्षेत्र के अहाते में स्थित है। इस क्षेत्र का अपना एक इतिहास है, जिसे इस लेख में समाहित करना मुश्किल है।

कालिन्दी (यमुनाजी) के तट पर बसा हुआ यह पावन सुरम्य एवं रमणीक क्षेत्र जहाँ मंद-मंद चलती हवायें शांति का संदेश प्रवाहित करती है, वहाँ का वातावरण धर्मार्थियों को मोक्ष का पथ प्रशस्त करती है और जो जैन धर्म के छठे तीर्थंकर भगवान प्रदमप्रभ की तपस्थली और केवलज्ञान भूमि है, वह 'प्रभाषगिरि' आज भी तमाम पुरातत्व सामग्री अपने गर्भ में छिपाये दर्शनार्थियों को अपनी ओर आकृष्ट कर रही है।

प्रभाषगिरि पर चित्रण के पूर्व भगवान पदमप्रभ की गर्भ एवं जन्मस्थली पर संक्षिप्त चित्रण आवश्यक है जो एक अविकसित तीर्थक्षेत्र के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। छठे तीर्थंकर की गर्भ और जन्मकल्याणक भूमि कौशाम्बी जो कभी जैन धर्म का प्रमुख केन्द्र रहा है और जिसकी स्थापना चन्द्रवंशी राजा कुशाम्बु ने की थी, वहाँ ऐसा कुछ भी परिलक्षित नहीं होता जो एक तीर्थक्षेत्र के अनुरूप हो। समाज के नाम पर वहाँ जैन का एक भी घर नहीं है और मंदिर के नाम पर लाल प्रभुदास जी आरा वालों का बनवाया हुआ एक जैन मंदिर और जैन धर्मशाला है जो गांव में अवस्थित है। मंदिर में दो गर्भगृह हैं, जिनमें दो सर्वतोभद्रिका प्रतिमायें तथा भगवान पदमप्रभ के चरण चिह्न विराजमान हैं।

प्रसिद्ध जैन शास्त्र 'तिलोयपण्णति' में भगवान पदमप्रभ की कल्याणक भूमि के रूप में कौशाम्बी का उल्लेख इस प्रकार आया है -

अस्सजुद किण्ह तेरसिदिणम्मि पउमप्पहो अचित्तासु।
धरणेण सुसीमाए कोसंविपुरवरे जादो ।।4।531।।

अर्थात तीर्थंकर पदमप्रभ ने कौशाम्बी पुरी में पिता धरण और माता सुसीमा से

जीवन की सच्चाई भविष्य की परछाई होती है ।

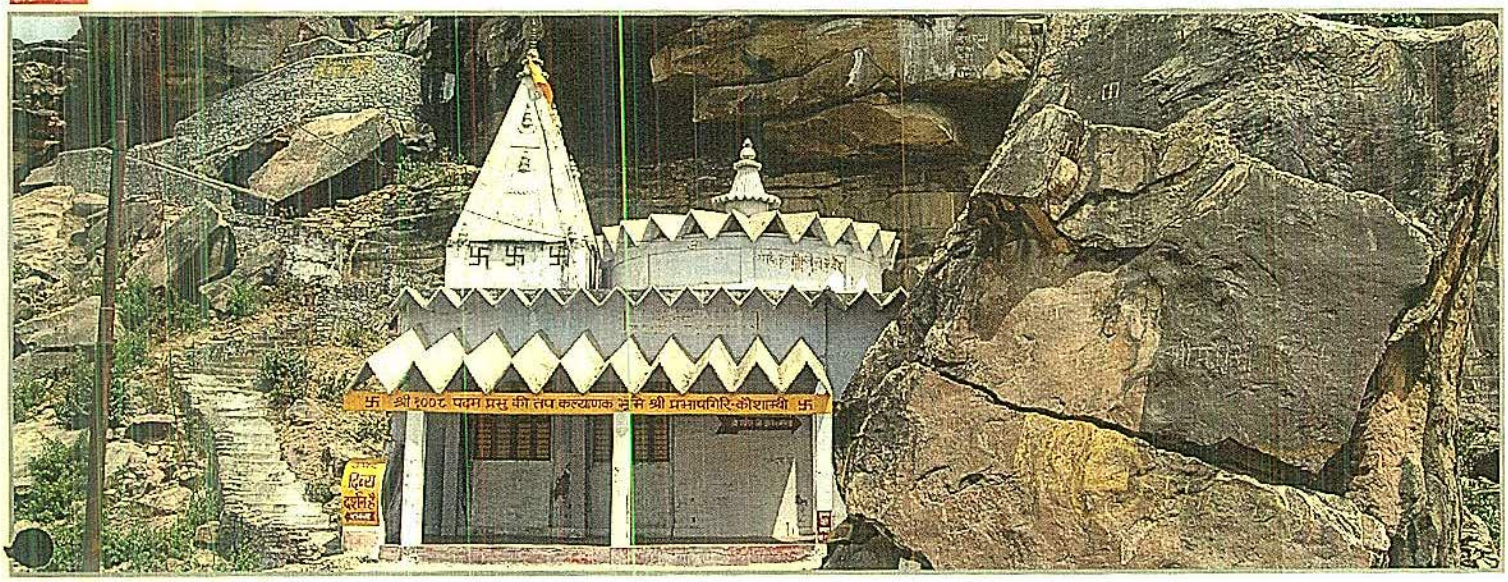

आसौज कृष्णा त्रयोदशी के दिन चित्रा नक्षत्र में जन्म लिया।

कौशाम्बी से 14 किमी. की दूरी पर भगवान पदमप्रभ जी की तपस्थली और केवलज्ञान स्थली 'प्रभाषगिरि' क्षेत्र स्थिति है, जो पूर्णतः एक तीर्थक्षेत्र के अनुरूप विकसित है। प्रभाषगिरि का दूसरा नाम 'पभोसा' जी एवं 'पपोसा' जी भी है। क्षेत्रीय लोग इस क्षेत्र को 'फगोसे' भी कहते हैं।

प्राचीन काल में यह क्षेत्र विश्व की प्राचीनतम एवं ऐतिहासिक नगरी कौशाम्बी का 'वन' क्षेत्र था। इसी वन में तीर्थंकर पदमप्रभ ने दीक्षा ली, तप किया, केवलज्ञान प्राप्त किया और पभोसागिरि पर ही प्रथम उपदेश देकर तीर्थ प्रवर्तन किया। यमुना के तट पर बसे होने के कारण यह पावन क्षेत्र पहाड़ी से देखने पर अत्यन्त रमणीय सुहावन और मनभावन लगता है। पहाड़ी से यमुना जी की खूबसूरत इन्द्रधनुषी छटा बरबस ही यात्रियों को कुछ और ठहरने को बाध्य कर देती है।

'प्रभासगिरि' क्षेत्र प्राचीन काल से ही जैन धर्म का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा है। यहाँ का प्राचीनतम जैन मंदिर पहाड़ी के ऊपर था। कहा जाता है कि इसी मंदिर के सामने एक मानस्तम्भ भी था। यहीं भट्टारक ललितकीर्ति की गद्दी भी थी। पहाड़ी की तलहटी में कई दिगम्बर जैन मंदिर भी थे। यह भी कहा जाता है कि संवत् 1825 में बिजली गिर जाने से मंदिर आदि को काफी क्षति हुई थी। फिर भट्टारक वाले स्थान पर संवत् 1881 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठापूर्वक पद्मप्रभ की प्रतिमा विराजमान की गई। इससे संबंधित शिलालेख भी मिले हैं।

अभी यह क्षेत्र संवत् 1825 में बिजली गिर जाने के बाद संवर ही रहा था कि लगभग 163 वर्ष बाद पुनः एक भयानक दुर्घटना का शिकार हो गया। वीर निर्वाण संवत् 2457 भाद्रपद कृष्ण नवमी वि.सं. 1988 रविवार की रात को एकाएक पहाड़ के तीन वजनी टुकड़े टूटकर इस पहाड़ी के मंदिर पर गिर जाने से पूरा प्राचीन मंदिर क्षेत्र ध्वस्त हो गया, किन्तु वेदी पर प्रतिष्ठित सभी प्रतिमायें बाल-बाल बच गई। इस चमत्कार के अतिरिक्त कुछ और नहीं कहा जा सकता। उस समय सभी प्रतिमाओं को पहाड़ पर ही एक कमरे में विराजमान कर दिया गया जो आज भी सुरक्षित है।

पहाड़ के टुकड़े गिरते ही अतिशयकारी भगवान पद्मप्रभ की मूलनायक प्रतिमा जो हल्के बादामी वर्ण की थी, सुर्खलोहित वर्ण की हो गयी थी। धीरे-धीरे साफ होते-होते उसका वर्ण काफी कम हो गया और प्रतिमा अपने मूलरूप में आने लगी। पहाड़ी गिरने से प्राचीन मंदिर के ध्वस्त होने के बाद पहाड़ी पर ही एक सुन्दर कांच का मंदिर बनवाया गया।

एक और दुर्घटना इस क्षेत्र में फरवरी सन् 2000 में घटी, जिसकी पीड़ा आज भी क्षेत्रीय समाज के चेहरों पर साफ नजर आती है। मूलनायक भगवान पदमप्रभ की प्रतिमा जो ईसा पूर्व द्वितीय या प्रथम शताब्दी की थी, हल्के बादामी रंग, पद्मासन मुद्रा, ढाई फुट अवगाहना एवं तमाम अतिशयों से युक्त थी, 17 फरवरी 2000 में चोरी हो गई। यद्यपि जैन समाज ने प्रतिमा प्राप्ति हेतु तमाम प्रयास किये, परन्तु सफलता नहीं मिली। इस प्रतिमा के चोरी हो जाने के बाद यद्यपि इस क्षेत्र की आभा मानो खो गई, फिर भी वह अतिशययुक्त प्रतिमा यहाँ के हर भक्तों के दिलों में विराजमान है। सभी को आज भी यह विश्वास है कि वह प्रतिमा चमत्कारी है और वह जहाँ भी होगी, अपने आप अवश्य ही यहाँ आ जायेगी।

विध्वंस और सृजन का बहुत ही घनिष्ठ संबंध है। विध्वंस के पश्चात ही सृजन का आगाज होता है, नवनिर्माण का आरम्भ होता है और नयी रचनाओं का निखार होता है। तमाम विषम परिस्थितियों से गुजरने के पश्चात क्षेत्र को सजान-संवारने का जिम्मा 'श्री पदमप्रभ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र जीर्णोद्धार समिति' एवं उनकी सहयोगी संस्थाओं ने लिया और यह क्षेत्र पुनः आधुनिकता की चादर ओढ़े दर्शनार्थियों के स्वागत के लिए उठ खड़ी हुई।

पहाड़ी पर कांच के मंदिर में मूलनायक भगवान पदमप्रभ की प्राचीन प्रतिमा के स्थान पर भगवान पदमप्रभ, चन्द्रप्रभ एवं शांतिनाथ जी की प्रतिमायें नये अतिशययुक्त आभा के साथ विराजमान है। वहीं पर सीढ़ी के पास बने नये मंदिर में भी भगवान पदमप्रभ, चन्द्रप्रभ एवं शांतिनाथ जी की प्रतिमायें

हमारा धर्म कथनी प्रधान नहीं, करनी प्रधान है।

प्रतिष्ठित हैं। पहाड़ के सबसे ऊपर भगवान पदमप्रभ के तपस्थली एवं ज्ञानस्थली पर भगवान के चरण स्थापित हैं। पहाड़ी पर जाने के लिए 184 सीढ़ियां बनी है। पहाड़ी की तलहटी में जहां एक प्राचीन धर्मशाला था आज आधुनिक सुविधायुक्त धर्मशाला का रूप ले लिया है।

धर्मशाला गेट के पास एक अन्य प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार हो चुका है, जहाँ क्षेत्र की प्राचीन प्रतिमायें विराजमान हैं। धर्मशाला प्रांगण में ही एक विशाल एवं तीन शिखरयुक्त भव्य मंदिर का निर्माण हुआ है, जिसमें मूलनायक भगवान पदमप्रभ के अतिरिक्त चन्द्रप्रभ एवं शांतिनाथ जी की विशाल पद्मासन प्रतिमायें विराजमान है। इस मंदिर के सामने मानस्तम्भ बना हुआ है। इसी मंदिर के नीचे पारणा मंदिर का भी निर्माण हुआ है, जहाँ मुनि महावीर को आहार देते हुए सती चंदनबाला की मूर्ति स्थापित है। इस मंदिर की दायीं तरफ भी एक मंदिर बना हुआ है जिसमें भगवान पदमप्रभ की 9 फिट की पदमासन उतंग प्रतिमा विराजमान है। मंदिर के बायीं ओर त्रिकाल चौबीसी मंदिर का निर्माण हुआ है जिसकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा जनवरी 2012 में सम्पन्न हुआ था।

त्रिकाल चौबीसी की नींव खोदते समय 17 जुलाई, 2009 को एक 4 फिट की ऊँची आदिनाथ की एक प्रतिमा निकली जिसे भविष्य में एक अन्य मंदिर का निर्माण कराके उसमें प्रतिष्ठित करने की योजना है। अद्भुत अतिशयों से युक्त, इस क्षेत्र पर प्रत्येक कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी एवं चैत्र पूर्णिमा को हजारों भक्त आकर भगवान पदमप्रभ के तप एवं ज्ञान कल्याणक का उत्सव धूम-धाम से मनाते हैं। जैनेतर भक्तों की भी इस क्षेत्र में बड़ी आस्था है।

प्राचीन साहित्य में ऐसे उल्लेख मिलते हैं कि ललितघट आदि 32 राजकुमार मुनि बनकर यहाँ आये और यमुना तट पर खड़े होकर विविध प्रकार के तप करने लगे। यमुना में एकाएक बाढ़ आने से वे सब मुनि बहकर स्वर्ग सिधार गये। उनकी स्मृति में यहां 32 समाधियाँ बनी हुई थी। ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि कल्पकाल के अंतिम नारायण श्रीकृष्ण के अंतिम काल का इतिहास इसी प्रभासगिरि की मिट्टी में ही लिखा गया था। मृग के भ्रम में जब जरत्कुमार ने अपने बाण का संधान किया तो वह नारायण को लगा। श्री कृष्ण ने अपने प्राण बड़ी शांति और समता से यहीं पर विसर्जित किये थे।

इलाहाबाद रेलवे स्टेशन के बाहर कौशाम्बी बस स्टैण्ड से हर समय सराय अकिल और गिराज मोड़ तक के लिए बस मिलती रहती है। गिराज मोड़ से क्षेत्र तीन किमी है। प्राइवेट साधनों से सीधे क्षेत्र पर आसानी से पहुंचा जा सकता है।

अतिशय क्षेत्र पदमपुरा (बाड़ा) राजस्थान की राजधानी जयपुर से 33 किमी. दक्षिण-पूर्व दिशा में राजमार्ग संख्या 2 जयपुर-कोटा रोड पर (खानिया-गोनेर होते हुए) शिवदासपुरा से 6 किमी. की दूरी पर अवस्थित होकर जैन धर्म के यश पताका को अपनी अद्वितीय विशालता, अद्वितीय सम्मोहित शिल्पकारिता और अद्वितीय तीर्थक्षत्र की उपमा से विभूषित कर रहा है। नगरीय एवं शहरी चहल-पहल से दूर एकान्त एवं शांति की खोज में भटक

रहे प्राणियों को यह क्षेत्र आहूत कर रहा है कि आओ यहाँ वह सब कुछ है जो तुम्हें चाहिए, बस केवल तुम अपनी बन्द आंखों से हमारी छवि को निहारो।

पदमपुरा (बाड़ा) तीर्थक्षेत्र का उदय अब से 70 वर्ष पूर्व सन् 1944 में मूला नामक बालक के हाथों हुआ जब घर की नींव खोदते समय छठे तीर्थंकर भगवान पदमप्रभजी की श्वेत वर्ण पाषाण की ढाई फुट अवगाहना वाली अतिमनोज्ञ पदमासन सातिशय मूर्ति निकली। वह शुभ तिथि 'वैशाख शुक्ल पंचमी संवत् 2001' इतिहास के पन्नों में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया।

इस क्षेत्र का पुराना नाम 'बाड़ा' था। कहा जाता है कि यहाँ पहले 'बाड़े' की तरह 40-50 झोपड़ियां थी, जिनमें किसान परिवार रहते थे। उसी में जाट जाति का मूला भी अपनी माता के साथ रहता था। एक दिन वह घर की नींव खोद रहा था कि अचानक उसकी फावड़ी एक पाषाण से टकराई। तब उसने खोदना बंद कर दिया। उसमें से एक ध्वनि भी निकली थी जिससे वह आश्चर्यचकित हो गया। इसके बाद वह ग्रामवासियों को बुलाया और सब को एकत्र कर जब वह भूमि पुनः खोदी तो उसमें एक पाषाण की मूर्ति निकली। मूर्ति को वहीं एक अस्थायी चबूतरे पर विराजमान कर दिया गया और ऊपर छप्पर की छाया कर दी गयी। मूर्ति निकलने का समाचार चारों ओर तत्काल फैल गया और अतिशयकारी मूर्ति के दर्शन करने सैकड़ों की संख्या में स्त्री-पुरुष सभी जाति के लोग आने लगे।

पदमप्रभ की मूर्ति निकलने के पूर्व की एक घटना है जो उनके

अतिशय को बयाँ करती है। कहा जाता है कि इस छोटे से गाँव बाड़ा में गम्भीर जल संकट था। इसी गांव के एक व्यक्ति को 'भैरोजी' की सवारी आती थी। एक दिन उस व्यक्ति से लोगों ने पूछा कि गांव का जल संकट कब दूर होगा तो उसने उत्तर दिया कि 'जब भूगर्भ से बाबा की चमत्कारी मूर्ति निकलेगी' और मूर्ति निकलने के बाद ऐसा हुआ था।

छप्पर में विराजे भगवान पदमप्रभ का अतिशय और चमत्कार की गाथा चारों तरफ दूर-दूर तक फैल गयी। सैकड़ों की संख्या में ग्रामीण उनके दर्शनार्थ आने लगे, मनौतियां मानी जाने लगी, ग्रामीणों के कष्ट दूर होने लगे, भूत-प्रेत बाधा वाले ग्रामीण भी आने लगे उन्हें भी उससे छुटकारा मिलने लगा, इस तरह से चमत्कार पर चमत्कार होने लगा और दिन-प्रतिदिन भीड़ बढ़ने ही लगी।

बाबा की यश गाथा को सुनकर कुछ जैन भी वहाँ आये और भगवान की प्रतिमा देखकर उनके हर्ष का ठिकाना न रहा। उन लोगों ने चिह्न देखकर तथा पदमप्रभ के रूप में पहचान कर जैन मत के अनुसार उनका वहीं पर पूजन-आराधन आरम्भ कर दिया। धीरे-धीरे दूर-दूर से जैन धर्मानुयायियों की भीड़ बढ़ने लगी। साथ ही एक मंदिर निर्माण की चर्चाएं भी आरम्भ हुई। कभी छोटे से जिन मंदिर की और कभी विशालतम तीर्थक्षेत्र के अनुरूप मंदिर की। आखिर में चमत्कार की विजय हुई और विशालतम तीर्थक्षेत्र के अनुरूप मंदिर का प्रस्ताव पारित हुआ तथा उसका मसौदा भी तैयार हुआ साथ ही उस पर कार्यवृत्ति भी आरम्भ हुई।

विशालतम मंदिर के निर्माण में सहयोग के लिए सर्वप्रथम दानवीर श्रेष्ठी श्री म्होरीलाल जी गोधा का नाम आता है जिन्होंने अपनी प्रेरणा से लगभग 38 बीघा जमीन का समर्पण मंदिर के लिए किया। क्षेत्र के प्रबंध समिति के प्रथम अध्यक्ष के रूप में स्व.श्री गोपीचन्द ठोलिया (जौहरी) और प्रथम मंत्री के रूप में स्व.श्री गुलाबचन्द काला का नाम आता है जिनके कुशल नेतृत्व में मंदिर का अजूबा गोलाकार नक्शा और मॉडल तैयार हुआ। कुशल वास्तुकार के रूप में स्व.श्री गुलाबचन्द लुहाड़िया का नाम आता है जिन्होंने इस अद्वितीय गोलाकार जिनालय का नक्शा व मॉडल खुद बनाया था। इन सबके अतिरिक्त जयपुर राज्य के लोकप्रिय प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के सहयोग को नहीं भुलाया जा सकता, जिन्होंने अतिशय युक्त भगवान पदमप्रभ के दर्शन के साथ-साथ यह भी घोषणा की कि इस क्षेत्र को विकसित करने में उनका भी योगदान रहेगा और उन्हीं के कारण राज्य के मुख्य अभियंता श्री तेजसिंह मलिक भी इस ओर सक्रिय हो गय।

बस अब इंतजार था उस शुभ तिथि का जब मंदिर के निर्माण का शुभारम्भ हो से, और धीरे-धीरे वह शुभ तिथि भी आ गयी। 14 दिसम्बर, 1945 ई. यह शुभ तिथि थी जब प्रसिद्ध जैन धर्मावलम्बी स्व.सेठ भागचन्द सोनी द्वारा पदमप्रभ के जयकारे के साथ मंदिर निर्माण कार्य का श्री गणेश किया

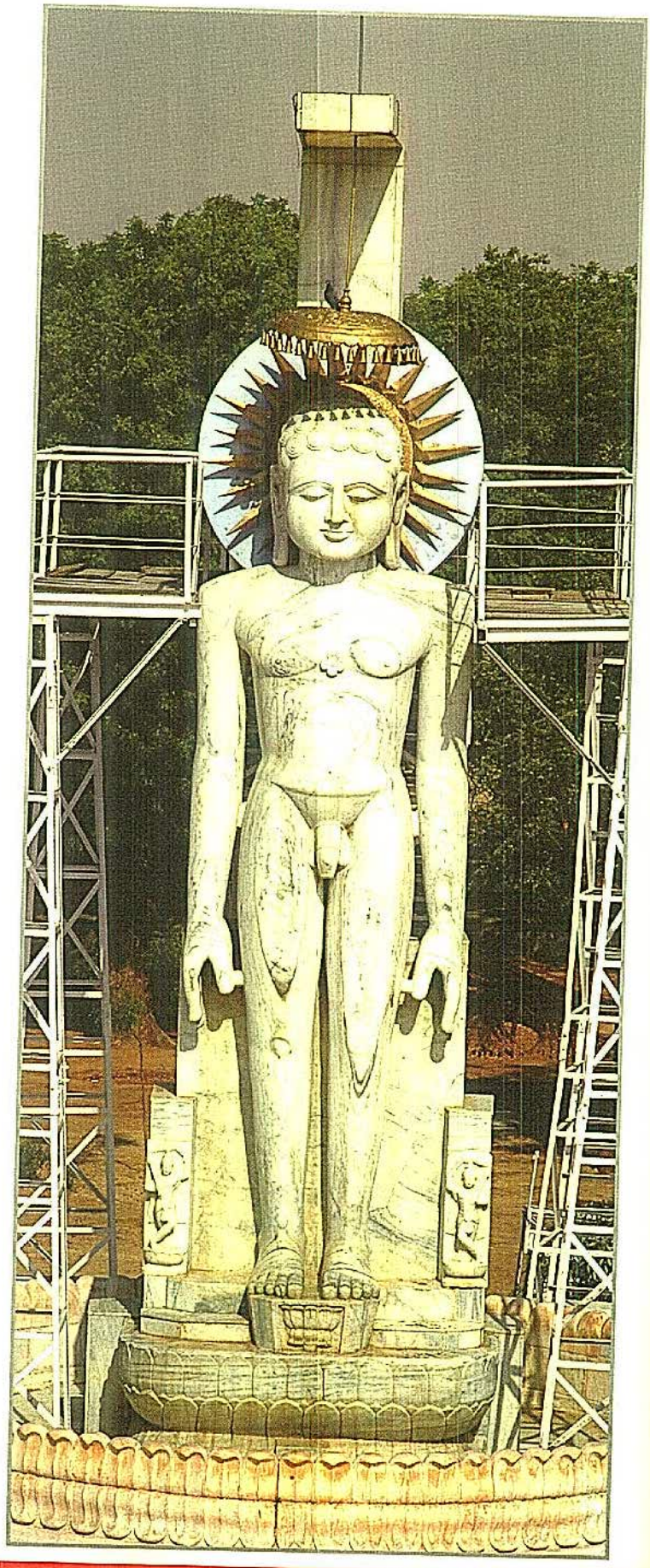

धर्म को जानने वाला व्यक्ति पुण्य से कमाता है और पुण्य के क्षेत्र में लगाता है।

गया।

लगभग 17 वर्षों के बाद भी मंदिर का पूर्ण निर्माण नहीं हो सका और तब 1962 ई. में आंशिक रूप से ही निर्मित इस नये मंदिर में भगवान पद्मप्रभ को समारोह पूर्वक प्रतिष्ठित कर दिया गया और मंदिर का निर्माण जारी रहा। पुनः 1969 ई. में विशाल पंचकल्याणक महोत्सव हुआ और अन्य कई मूर्तियाँ भी विभिन्न वेदियों में विराजमान कर दी गई। मूर्ति प्रकट होने वाले स्थल पर एक कलापूर्ण छतरी भी निर्मित की गई।

अतिशय क्षेत्र पदमपुरा का विशाल मंदिर वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। 32´325 मीटर का वर्गाकार कटला और उसके बीचों-बीच 65´65 मीटर का गोलाकार मंदिर जिसकी अद्भुत छटा को निखारने में श्वेत मारबलों की महत्वपूर्ण भूमिका है जो उसे देवों द्वारा निर्मित होने का भ्रम पैदा करती है। जमीन से 26-27 मीटर ऊँचा शिखर दूर से ही दर्शनार्थियों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है और शिखर पर स्थापित मंगल कलश सभी के मंगल की सूचना देता है। मंदिर की गोलाकार सीढ़ियाँ अपनी आकर्षक बनावट से उसके सौंदर्य में चार चॉद लगाती है। सामने मानस्तंभ मंदिर को सम्पूर्णता प्रदान करती है और पीछे भगवान पद्मप्रभु की विशाल खड्गासन प्रतिमा इस मंदिर की खूबसूरती को और अधिक निखारती है। मंदिर की अद्वितीय शैली दर्शनार्थियों को थोड़ा और ठहरने के लिए विवश कर देती है।

पदमपुरा तीर्थ यातायात के साधनों से जुड़ा हुआ है। यहाँ से रेल्वे स्टेशन शिवदासपुरा-पदमपुरा स्टेशन पांच किमी दूर है जहाँ क्षेत्र के वाहन यात्रियों के लिए सदैव सुलभ है। जयपुर व अन्य स्थानों से भी यह तीर्थ सड़क मार्ग से जुड़ा है। इस क्षेत्र से श्री महावीर जी 180 किमी, तिजारा 240 किमी, चाँदखेड़ी 342 किमी और केसरिया जी 536 किमी दूर है।

आधुनिक सुविधाओं से युक्त यह विशाल मंदिर जहाँ वाचनालय, राजकीय चिकित्सालय, राजकीय विद्यालय, बैंक, डाक-तार, भोजनालय, धर्मशालायें आदि सभी कुछ हैं और जहाँ ग्रामीणों, जैन यात्रियों के अतिरिक्त विदेशी मेहमानों का भी आवागमन बना रहता है। अपनी असाधारण सौंदर्य से आज सभी को अतिशयकारी भगवान पदमप्रभ के दर्शनार्थ पहुंचने के लिए विवश कर रहा है। क्षेत्र पर बैशाख शुक्ला पंचमी, (मूर्ति निकलने की तिथि पर), तथा फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी (पद्मप्रभ का मोक्ष कल्याणक तिथि) को मेला लगता है। क्षेत्र का प्रमुख वार्षिक मेला दशहरे के अवकाश के दिनों में लगता है।

धर्म विपत्तियों में मुस्कुराना सिखलाता है।

जैनधर्म के छठवें तीर्थंकर भगवान् श्री पद्मप्रभ स्वामी

डॉ. सुरेन्द्रकुमार जैन
मो. 09826565737

दूसरे धातकीखण्डद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्रान्तर्गत सीता नदी के दक्षिण तट पर स्थित वत्स देश के सुसीमा नगर में महाराज अपराजित राज्य करते थे। वे नाम से भी अपराजित थे और व्यवहार में भी क्योंकि उनका कोई शत्रु नहीं था। उन्होंने अपने सभी शत्रुओं को जीतकर अपने राज्य और अपने आपको अपराजित बना लिया था। दान में उनकी रुचि थी। धन–धान्य की सम्पन्नता थी। प्रजा संतुष्ट थी। पुण्य उनके साथ था अतः चिरकाल तक सुखोपभोग किया।

एक दिन राजा अपराजित के मन में आया कि सुख तो पुण्य का फल है यदि कालान्तर में पुण्य ही नहीं रहा तो सुख कहाँ से आयेगा? पदार्थ तो क्षणभंगुर हैं। शाश्वत तो एक मात्र आत्मा ही है। अतः उसी को वश में करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह विचार कर उन्होंने अपने पुत्र सुमित्र के लिए राज्यभार सौंप दिया और वन में जाकर पिहितास्रव जिनेन्द्र को दीक्षा गुरु बनाया। ग्यारह अंगों का अध्ययन कर तीर्थंकर प्रकृति का बंध किया। आयु के अंत में समाधि मरण पूर्वक देह का विसर्जन किया। फलस्वरूप ऊर्ध्वग्रैवेयक के प्रीतिंकर विमान में अहमिन्द्र पद प्राप्त किया और पर्यायजन्य समस्त सुखों का भोग किया।

अहमिन्द्र पद की आयु भोगकर अपराजित के जीव ने जम्बूद्वीप की कौशाम्बी नगरी में इक्ष्वाकुवंशी काश्यपगोत्री धरण नाम राजा की सुसीमा नामक रानी के गर्भ में माघ कृष्ण षष्ठी के दिन प्रवेश किया। बालक के गर्भ में आने से पूर्व रानी ने 16 स्वप्न देखे जिनका फल राजा धारण ने तीर्थंकर पुत्र का उत्पन्न होना बताया। इससे रानी तथा सम्पूर्ण प्रजा को सुखद अनुभूति हुई। तीर्थंकर के गर्भ में आने से छह माह पूर्व से तथा गर्भ में रहने के नौ माह तक; इस तरह पन्द्रह मास तक रत्नों की वर्षा देवों के द्वारा राजा धारण के गृह आंगन में की गई। जिससे सुख–समृद्धि, राज्य वैभव में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। तीर्थंकर बालक के गर्भ में आने पर जो उत्सव मनाया जाता है वह गर्भकल्याणक महोत्सव कहलाता है।

गर्भ में नौ माह व्यतीत होने पर कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के दिन त्वष्टृ योग में लाल कमल की कलिका के समान कांतिवाले पुत्र रत्न को सुसीमा रानी ने उत्पन्न किया। पुत्र के उत्पन्न होते ही गुणों की उत्पत्ति हुई, दोष समूह का नाश हुआ और तीन लोक में क्षणभर के लिए शांति की अनुभूति हुई जो तीर्थंकर बालक के उत्पन्न होने का प्रभाव संसूचित करती है। तीर्थंकर बालक के जन्म के साथ ही सौधर्म इन्द्र का आसन कंपायमान हुआ जिससे उसने जाना कि कौशाम्बी नगरी में तीर्थंकर बालक का जन्म हुआ है। वह तुरंत अपने समस्त देव परिकर के साथ ऐरावत हाथी को लेकर आया और इन्द्राणी द्वारा तीर्थंकर शिशु को माता के पास से मंगवाकर सुमेरुपर्वत पर ले गया। जहाँ पाण्डुकशिला पर विराजमान कर क्षीरसागर के जल से 1008 कलशों से उनका अभिषेक किया और उनकी अष्टद्रव्य से पूजा की। हर्षपूर्वक तीर्थंकर बालक का नाम श्री पद्मप्रभ रखा। उनका चिह्न श्वेत कमल चिह्नित किया गया। श्री भगवान् पद्मप्रभ तीर्थंकर सुमतिनाथ भगवान् की तीर्थ परम्परा के 90हजार करोड़ सागर व्यतीत होने पर उत्पन्न हुए थे। जन्म से ही वे मति, श्रुत और अवधिज्ञान के धारी थे।

आचार्य श्री समन्तभद्र स्वामी ने वृहत्स्वयंभूस्तोत्र में तीर्थंकर पद्मप्रभ जिनेन्द्र के विषय में लिखा है कि–

पद्मप्रभः पद्मपलाशलेश्यः, पद्मालयालिंगित चारुमूर्तिः।
बभौ भवान् भव्यपयोरुहाणां, पद्माकराणामिव पद्मबन्धुः।।

अर्थात् जिनके शरीर का वर्ण कमलपत्र के समान लाल रंग का था तथा जिनकी आत्मस्वरूप निर्मलमूर्ति अनन्तज्ञानादि रूप अन्तरंग लक्ष्मी से एवं जिनकी समस्त उत्तम लक्षणों से सहित शरीर रूप मूर्ति निःस्वेदत्व (पसीना के अभाव) आदि रूप बाह्य लक्ष्मी से आलिंगित थी; ऐसे पद्मप्रभ जिनेन्द्र थे। हे जिनेन्द्र! आप भव्य जीव रूप कमलों के हितोपदेश रूप विकास के लिये उस तरह सुशोभित हुए थे जिस तरह कि कमल समूह के विकास के लिये सूर्य सुशोभित होता है।

श्री भगवान् पद्मप्रभ तीर्थंकर की आयु 30लाख पूर्व थी। उनका शरीर 250 धनुष ऊँचा था। उनका कुमार काल साढ़े सात लाख पूर्व का था। राज्यकाल साढ़े इक्कीस लाख पूर्व तथा 16 पूर्वांग सहित था। उन्होंने वैवाहिक जीवन व्यतीत किया। आयु का चौथाई भाग व्यतीत होने पर उन्हें एक छत्र राज्य प्राप्त हुआ। आचार्य गुणभद्र स्वामी ने उत्तरपुराण (श्लोक 37–39) में इसका वर्णन करते हुए लिखा है कि–

पट्टबन्धेऽस्य सर्वस्य स्वस्य स्वस्येव सम्मदः।
महाभयानि तद्देशे नष्टान्यष्टौ निरन्वयम्।।
दारिद्रयं विद्रुतं स्वैरं स्वं संप्रवर्तते।
सर्वाणि मंगलान्यासन् संगमः सर्वसम्पदाम्।।

सत्य परेशान हो सकता है, परन्तु पराजित नहीं।

कस्य कस्मिन्समीप्सेति वदान्येष्वभवद्वचः।
कस्यचिन्नैव कस्मिंश्चिदर्थितेत्यवदज्जनः।।

अर्थात् जब भगवान् पद्मप्रभ को राज्यपट्ट बाँधा गया तब सबको ऐसा हर्ष हुआ मानो मुझे ही राज्यपट्ट बाँधा गया हो। उनके देश में आठों महाभय समूल नष्ट हो गये थे। दरिद्रता दूर भाग गई, धन स्वच्छदन्ता से बढ़ने लगा, सब मंगल प्रकट हो गये और सब सम्पदाओं का समागम हो गया। उस समय दाता लोग कहा करते थे कि किस मनुष्य को किस पदार्थ की इच्छा है और याचक लोग कहा करते थे कि किसी को किस पदार्थ की इच्छा नहीं है।

इसतरह राज्यसुख भोगते हुए राजा पद्मप्रभ की आयु जब 16 पूर्वांग कम 1लाख पूर्व की रह गयी तब किसी समय द्वार पर बँधे हुए हाथी की दशा सुनकर उन्हें अपने पूर्व भवों का ज्ञान हो गया और संसार असार दिखाई देने लगा। उन्होंने विचार किया कि इस संसार में ऐसा कौन सा पदार्थ है जिसे मैंने देखा न हो, छुआ न हो, सूंघा न हो, सुना न हो और खाया न हो; जिससे वह नए के समान जान पड़ता हो? इसका उत्तर भी उन्होंने ही प्राप्त किया कि ऐसा पदार्थ कोई नहीं है। अतः यह संसार छोड़ने योग्य है।

उन्होंने जिन दीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय किया। वैराग्य भाव को जानकर लौकांतिक देवों ने आकर अनुमोदना की और चतुर्निकाय के देवों ने उनके दीक्षा कल्याणक का अभिषेकोत्सव किया। वे पद्मप्रभ 'निवृत्ति' नामक पालकी पर सवार होकर 'मनोहर' नाम के वन में गये और वेला का नियम लेकर कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी के दिन सायंकाल चित्रा नक्षत्र में एक हजार राजाओं के साथ उन्होंने पंचमुष्टि केशलोंच कर जिन दीक्षा धारण कर ली। दीक्षा ग्रहण करते ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान उत्पन्न हो गया।

जिनदीक्षा ग्रहण करने के दूसरे दिन तीर्थंकर मुनि श्री पद्मप्रभ महाराज आहार हेतु वर्द्धमान नामक नगर में आये। वहाँ शुक्ल कांति के धारक राजा सोमदत्त ने उन्हें आहार दान दिया। आहार दान के परिणाम स्वरूप पंचाश्चर्य हुए। अनन्तर श्री पद्मप्रभ स्वामी ने तपःसाधना करते हुए मौनपूर्वक छद्मस्थ अवस्था के छह माह व्यतीत किये। तदनंतर क्षपकश्रेणी पर आरूढ़ होकर चार घातिया कर्मों का नाश किया और चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन जब सूर्य मध्याह्न से कुछ नीचे ढल चुका था तब चित्रा नक्षत्र में प्रियंगु वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया। इन्द्र ने आकर केवलज्ञान कल्याणक के उपलक्ष्य में अरहन्त जिन सर्वज्ञ श्री पद्मप्रभ स्वामी की पूजा की।

सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से कुबेर ने समोशरण की रचना की। समोशरण के मध्य में अंतरिक्ष पर तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ स्वामी विराजमान हुए। आत्मा के कल्याण हेतु भव्य जीवों के समक्ष उनकी दिव्यध्वनि खिरी।

उनके साढ़े आठ योजन क्षेत्रफल वाले समोशरण में वज्रचामर आदि 110 गणधर, 2,300 पूर्वधारी, 2,69,000 शिक्षक, 10,000 अवधिज्ञानी, 12,000 केवलज्ञानी, 16,800 विक्रियाऋद्धि धारी, 10,300 मनःपर्ययज्ञानी, 9,600श्रेष्ठवादी; इस प्रकार कुल 3,30,000 मुनि सदा उनकी स्तुति करते थे। रात्रिषेणा आदि 4,20000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक, 5 लाख श्राविकाएं, असंख्यात देव–देवियां और संख्यात तिर्यंच उनके समोशरण में बैठकर दिव्यध्वनि सुनते थे। उ मुख्य श्रोता धर्मवीर्य थे।

दिव्यध्वनि के माध्यम से भव्य जीवों को मोक्षमार्ग का दिग्दर्शन कराने वाले तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ स्वामी कालान्तर में सम्मेदशिखर पहुँचे वहाँ उन्होंने एक माह तक ठहर कर योग निरोध किया तथा एक हजार मुनियों के साथ प्रतिमायोग धारण किया। अनन्तर फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के दिन सायंकाल चित्रा नक्षत्र में उन्होंने समुच्छिन्नक्रियाप्रतिपाती नामक चतुर्थ शुक्लध्यान के द्वारा कर्मों का नाशकर 324 जीवों के साथ खड्गासन से निर्वाण प्राप्त किया। इन्द्रआदि देवों ने आकर निर्वाणकल्याणक की पूजा की।

आचार्य श्री गुणभद्र स्वामी ने तीर्थंकर श्री पद्मप्रभ स्वामी की स्तुति करते हुए प्रश्नोत्तर शैली में लिखा है कि–

किं सेव्यं क्रमयुग्ममब्जविजयामस्यैव लक्ष्म्यास्पदं,
किं श्रव्यं सकलप्रतीतिजननादस्यैव सत्यं वचः।
किं ध्येयं गुणसन्ततिश्च्युतमलस्यास्यैव काष्ठाश्रया–
दित्युक्तस्तुतिगोचरः स भगवान् प्रद्मप्रभः पातु वः।।

अर्थात् सेवा करने योग्य क्या है? कमलों को जीत लेने से लक्ष्मी ने भी जिन्हें अपना स्थान बनाया है ऐसे इन्हीं पद्मप्रभ भगवान् के चरण युगल सेवन करने योग्य हैं। सुनने योग्य क्या है? सब लोगों को विश्वास उत्पन्न कराने वाले इन्हीं पद्मप्रभ भगवान् के सत्य वचन सुनने के योग्य हैं, और ध्यान करने योग्य क्या है? अतिशय निर्मल इन्हीं पद्मप्रभ भगवान् के दिग्दिगन्त तक फैले हुए गुणों के समूह का ध्यान करना चाहिये। इसप्रकार उक्त स्तुति के विषयभूत भगवान् पद्मप्रभ तुम सबकी रक्षा करें।

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये।

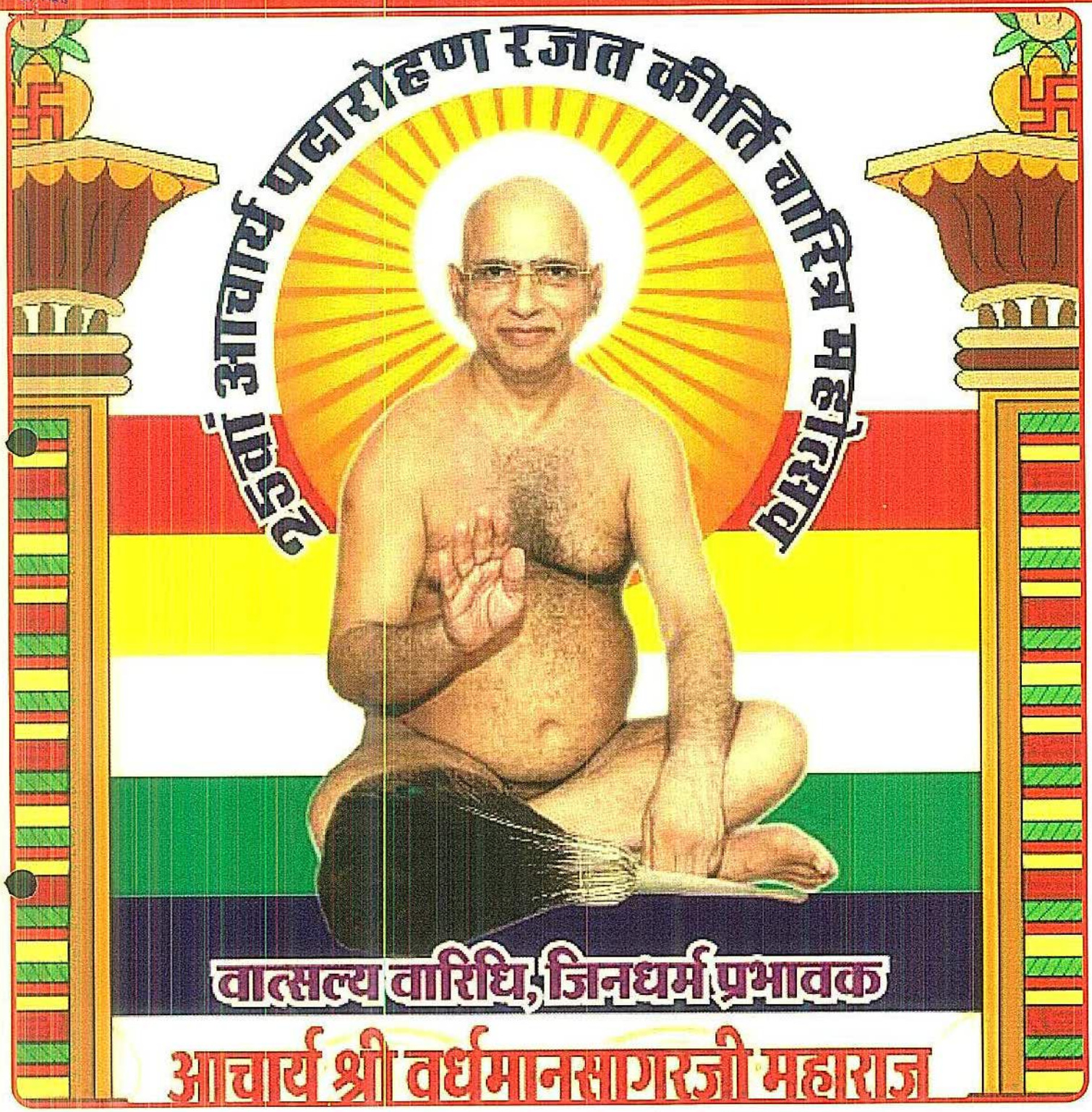

के 25वें आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार

आपके श्री चरणों में बारम्बार नमोस्तु करती है।

नमन्कर्ता

सुधीर जैन	पंकज जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामंत्री

जहां सत्य होता है वहां अहिंसा होती है।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी : व्यक्तित्व और कृतित्व

-विद्यारत्न डॉ. नरेन्द्रकुमार जैन
मो.९९२६०५५७५४

जैनधर्म में आचार का विशेष महत्त्व है। अच्छा तथा श्रेष्ठ आचरण सदाचार कहलाता है। जैनधर्म में पंच परमेष्ठी का आचार सर्वोच्च आचार है जिनमें अरहंत और सिद्ध परमात्मा हैं। आचार्य, उपाध्याय और साधु मुनिधर्म का पालन करते हुए आचार का सर्वोच्च आदर्श उपस्थित करते हैं। मुनिधर्म को साक्षात् मोक्ष का कारण माना गया है। यह धर्म मुनष्य देह में ही प्राप्त होता है अन्य जन्म में नहीं इसलिए वैराग्य मय भावना के प्रकट होने पर व्यक्ति संसार, शरीर और भोगों से विरक्त होकर ज्ञान, ध्यान और तप में लीन रहने के लिए मुनि बन जाता है।

मुनि का पर्यायवाची शब्द श्रमण है। श्रमण के लिए पाँच महाव्रत, पाँच समितियों का पालन समस्त सावद्ययोग का त्याग, मन और इन्द्रियों को वश में करना, समता, वंदना, स्तुति, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय और कायोत्सर्ग; इन छह क्रियाओं का पालन करना, केशलोंच करना, स्नान नहीं करना, एक बार भोजन करना, खड़े-खड़े भोजन करना, वस्त्र धारण नहीं करना, पृथ्वी पर शयन करना, दन्तवन न करना, तप, संयमचारित्र, परिषहजय, अनुप्रेक्षायें, उत्तम क्षमादि दसधर्म, ज्ञान विनय, दर्शन विनय, चारित्र विनय और तप विनय की सेवा करना; इन सब नियमों का पालन करना आवश्यक है। सर्वार्थसिद्धि में कहा गया है-"आचरति आचारयति इति आचार्य :" अर्थात् जो स्वयं आचारण करें और अपने शिष्यों को आचरण करायें वह आचार्य कहलाते हैं। दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और वीर्य; इन पंच आचारों का स्वयं पालन करते हैं और दूसरे साधुओं से पालन कराते हैं वे आचार्य हैं। ये सर्वकाल संबंधी आचरण को जानते हैं, योग्य आचरण करते हैं और अन्य साधुओं को योग्य आचरण कराते हैं। संघ के संग्रह अर्थात् दीक्षा और निग्रह अर्थात् शिक्षा या प्रायश्चित देने में कुशल हैं। सूत्र अर्थात् परमागम के अर्थ में विशारद हैं। जिनकी कीर्ति सर्वत्र फैल रही है, जो संघ के सारण (रत्नत्रय में लगाना) वारण (दोषों को रोकना) और साधन (व्रत पालन हेतु साधन जुटाना) आदि कार्य में सतत् उद्यत हैं; ऐसे आचार्य साधु संघ का नेतृत्व करते हैं। इनके ३६ मूलगुण शास्त्रों में वर्णित हैं।

२०वीं सदी में दिगम्बर श्रमण परम्परा के चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज ने मुनिदीक्षा लेकर मुनिधर्म की परम्परा को सम्पूर्ण भारतवर्ष में प्रतिष्ठापित किया। उन्हीं की आचार्य परम्परा में वर्तमान पंचम पट्टाधीश आचार्य वर्द्धमान सागर महाराज सभी बाह्याडम्बरों से दूर रहकर श्रमण (जैन) धर्म की धर्मध्वजा को फहराते हुए हजारों लोगों को सन्मार्ग पर लगा रहे हैं।

पश्चिम निमाड़ की पावन भूमि में खरगोन जिले के प्रमुख नगर सनावद में भादौ सुदी ७ सं. २००६ तदनुसार दि. १८ सितम्बर सन् १९५० को माँ श्रीमती मनोरमा देवी तथा पिता श्री कमलचन्द पंचोलिया के यहाँ एक बालक का जन्म हुआ जिसका नाथ यशवंतकुमार रखा गया। श्री यशवंतकुमार जी श्री मयाचंद दिगम्बर जैन उ.मा. विद्यालय, सनावद में प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण की। बी.ए. तक लौकिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी आपका मन सांसारिक कार्यों में नहीं लगता था। अतः आपने आर्यिकारत्न ज्ञानमती माता जी का सनावद चातुर्मास के दौरान अपने धार्मिक संस्कारों को दृढ़ बनाया। इन्दौर में ५वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत लेने के उपरांत आचार्य श्री विमलसागर जी महाराज से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत ग्रहण किया। तदनन्तर आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज से फाल्गुन सुदी ८संवत् २५२५ में श्री शांतिवीरनगर महावीर जी 'मुनिदीक्षा लेकर मुनि श्री वर्द्धमानसागर महाराज' इस नाम को पाया और सार्थक किया। उस समय आपकी उम्र मात्र १८ साल की थी। चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर महाराज की परम्परा के चतुर्थ पट्टाचार्य श्री अजितसागर जी महाराज ने सन् १९९० में अपनी समाधि से पूर्व एक लिखित आदेश में मुनि श्री वर्द्धमान सागर जी को पंचम पट्टाधीश के रूप में आचार्य घोषित किया। उनके आदेश के अनुसार राजस्थान के उदयपुर जिले के पारसोला नामक स्थान पर अपार जन सैलाब के बीच आपका आचार्य शांतिसागर जी महाराज की परम्परा के पंचम पट्टाचार्य पद पदारोहण कराया गया। तब से आप निर्दोष रत्नत्रय का पालन करते हुए अनेक भव्यजनों को सन्मार्ग पर लगा रहे हैं। संघ में सनावद नगर में जन्में मुनिश्री अपूर्वसागर जी तथा मुनिश्री अर्पितसागर जी भी ज्ञान, ध्यान और तपाराधना में लीन हैं। खण्डवा, पीपलगोन, बड़वाह तथा अनेक स्थानों के श्रावकजन संघ में रहकर धर्मसाधनारत हैं।

आचार्य बनने के बाद परम पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महाराज का संघ सहित सन् १९९२ में इन्दौर होते हुए प्रथम बार सनावद आगमन हुआ। सम्पूर्ण निमाड़वासी उनकी अभूतपूर्व अगवानी के लिए आतुर थे। विशाल जुलूस के लिए बग्घी, बैंडबाजों की व्यवस्थाओं में समाजजन संलग्न थे। मेरे मन में विचार आया कि कुछ दूर पहले से जाकर आचार्य जी के दर्शन किये जायें। अतः मैं (डॉ. नरेन्द्र जैन 'भारती') वरिष्ठ पत्रकार जगदीश विद्यार्थी (नई दिल्ली), अब्दुल हमीद खान (चौथा संसार) श्री शैलेन्द्र एन.जी (दैनिक दोपहर) तथा समाजसेवी श्री चांदमल जैन के साथ सनावद से लगभग ४० कि.मी. दूर ग्राम बाई पहुँचे और एक विशाल चबूतरे पर दोपहर की

बुद्धिमान व्यक्ति सुनते सब की हैं लेकिन करते मन की है ।

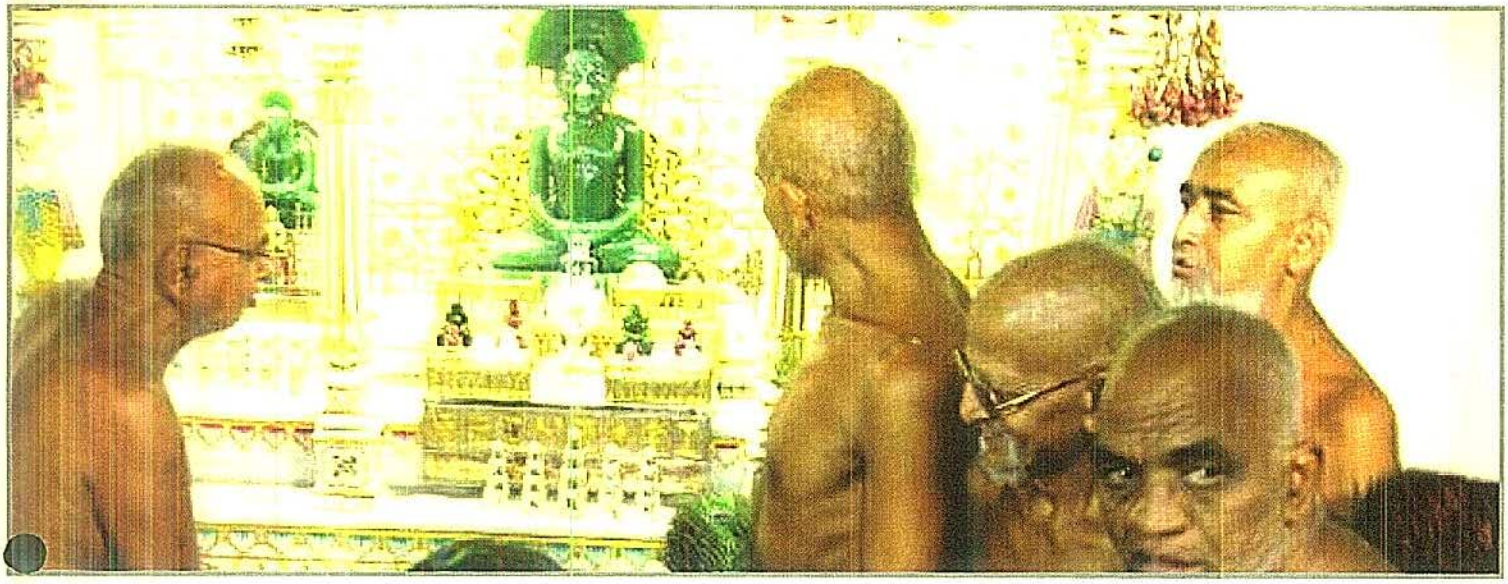

सामायिक के बाद आपके दर्शन कर धर्म साधना, समाज, राजनीति, मानवीय इच्छाओं और सामाजिक व्यवस्थाओं पर करीब २घंटे तक चर्चा हुई। जिसके सारा आपसे रूप में यहाँ कुछ अंश प्रस्तुत हैं-

वर्तमान राजनीति के विकृत स्वरूप पर चर्चा करते हुए पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर ने बताया कि आत्मिक उन्नति ही पूर्ण विकास है जो धर्म से संभव है परन्तु धर्म का ह्रास हो रहा है; इसका कारण राजनीति है। वर्तमान राजनीति धर्म पर आधारित नहीं है इसलिए व्यक्ति अन्याय और अत्याचार के मार्ग पर आगे बढ़ रहा है। धर्म साधना के माध्यम से विकृतियों को रोका जा सकता है। प्राचीन काल के राजागण साधु-संतों के उपदेश सुनते थे, उनसे प्रभावित होते थे इसलिए न्याय नीति थी लेकिन आज के नेताओं को साधु-संतों के पास आने का समय नहीं है इसलिए धर्म और राजनीति में विवाद बढ़ गया है। सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि आज भौतिक साधनों को व्यक्ति सम्पन्नता मानकर उसी की खोज में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है। इससे उसे शांति नहीं मिल सकती। शांति का स्रोत तो अपनी आत्मा है वहाँ उसकी दृष्टि नहीं जाती। धर्म मार्ग पर चलकर ही शांति मिलेगी। जैनधर्म को शाश्वत सुख का साधन बताते हुए आपने बताया कि साधु-संतों की संगति से ही इस शांति का मार्ग मिल सकता है। इस तरह अत्यंत सौहार्दपूर्ण वातावरण में यह बातचीत हुई। यह कहीं नहीं लगा कि मैं २०वीं शताब्दी की दिगम्बर परम्परा के महान् आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज की आचार्य परम्परा के वर्तमान आचार्य से मिल रहा हूँ। अगले दिन एक समाचार पत्र में समाचार का शीर्षक शीर्षक था 'आचार्य वर्द्धमानसागर जी के निमाड़ प्रवेश पर पत्रकारों द्वारा सर्वप्रथम स्वागत।' जब-जब आचार्य जी के जीवन व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा होती है, यह शीर्षक अनवरत ध्यान में आ जाता है।

आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी विवादों में नहीं पड़ते। आचार्य श्री जब बुन्देलखण्ड की यात्रा पर निकले और पपौरा जी में चातुर्मास हुआ तो कोई विवाद नहीं हुआ। पूरा बुन्देलखण्ड जलाभिषेक की परम्परा का अनुयायी है। पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महाराज का स्पष्ट मत है कि जहाँ जैसी परम्परा हो वैसा कार्य होना चाहिए। पूजा पद्धति को लेकर विवाद उचित नहीं। यदि सभी इसी नीति पर मन से कार्य करें तो विवाद हो ही नहीं सकता। 'पपौरा' से विहार कर आचार्य संघ 'नवागढ़' जा रहा था तो 'नान्द्रा' में आपके दर्शन किये। आपका आशीर्वाद लिया आज के सम्पूर्ण परिप्रेक्ष्य में देखा जाये तो यही कहा जा सकता है कि आज संतशिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज एवं पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महाराज जैसे संतों की महती आवश्यकता है जो सम्पूर्ण जनमानस में जैनधर्म के पावन सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार तो करें ही साथ ही निर्दोष मुनिचर्या के श्रेष्ठ आदर्श को भी समाज के सामने उपस्थित करें। हम सभी अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं कि इस पंचम काल में भी साधु-संस्थाओं के माध्यम से धर्म का अनवरत प्रचार-प्रसार हो रहा है। आचार्य वर्द्धमानसागर जी का वात्सल्य, स्नेह और सद्भावना सभी साधु संतों के पास निरन्तर धर्म ग्रहण करने की प्रेरणा देती है।

राजस्थान के मदनगंज-किशनगढ़वासियों के लिए यह उनके महान् पुण्य का प्रभाव है कि उन्हें निस्पृही, साधक, ज्ञान-ध्यान और तपश्चर्या में लीन पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महाराज के आचार्य पदारोहण की २५वीं वर्षगांठ मनाने का सुअवसर मिला है। हम सभी यह कामना करते हैं कि पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर जी का यथेष्ठ मार्गदर्शन हम सभी को सत्पथ का मार्ग प्रशस्त कर मोक्ष प्राप्ति में सहायक बनेगा। पूज्य आचार्य श्री वर्द्धमानसागर महराज के चरणों में सादर नमोस्तु करते हुए अंत में यही कामना करता हूँ-

रहे सदा सत्संग उन्हीं का, ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उनहीं जैसी चर्या में यह, चित्त सदा अनुरक्त रहे।।।

बिना पूछे न बोलें और पूछने पर असत्य न बोलें।

24 तीर्थंकरों के 120 कल्याणक 24 स्थानों पर हुए

- करुणेन्द्र कुमार जैन, मैनपुरी (उ.प्र.)

तीर्थंकरों के आशीर्वाद से मुझे ऐसा सौभाग्य प्राप्त हुआ कि 24 तीर्थंकरों के 120 कल्याणक स्थानों के दर्शन प्राप्त हुए। अनेकों जैन विद्वानों (दिगम्बर व श्वेताम्बर) की पत्रिकाएं पढ़ने के बाद व कई मुनि महाराजों के प्रवचन सुनने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि प्रथम तीर्थ कौन-कौन से हैं? पहले व प्रथम तीर्थ वो हैं- जहां पर तीर्थंकर का कोई कल्याणक हुआ हो। बस उसी दिन प्रण कर लिया कि मुझे तीर्थंकरों के 120 कल्याणकों के दर्शन करने हैं। इसी वर्ष अनंत चौदस को कोल्हुआ पहाड़ के दर्शन करके मैंने 120 कल्याणकों के दर्शन पूर्ण किये। सबसे चमत्कारिक बात है कि चौबीसों तीर्थंकरों के 120 कल्याणक चौबीस स्थानों पर ही हुए हैं। कई स्थान ऐसे हैं जो एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी बहुत ही कम है जैसे कि अयोध्या से रतनपुरी सिर्फ 25 कि.मी.। बनारस से सारनाथ व चन्द्रपुरी 7 व 25 कि.मी. की ही दूरी पर हैं।

जब इन तीर्थ क्षेत्रों का नाम का वर्णन या होर्डिंग बने तो कल्याणक शब्द का प्रयोग अवश्य होना चाहिए जैसे कि कल्याणक कम्पिला तीर्थक्षेत्र या श्री कम्पिला कल्याणक तीर्थक्षेत्र। कल्याणक शब्द से लोगों में जिज्ञासा होगी कि इस स्थान पर किस तीर्थंकर का गर्भ, जन्म, तप, ज्ञान, मोक्ष हुआ है।

प्रत्येक जैन बंधु व महिलाओं को ऐसा नियम बना लेना चाहिए कि जीवन में 120 कल्याणकों के दर्शन अवश्य करें। न कर सकें तो कम से कम शतक को अवश्य लगायें। इस लेख को पढ़ने के बाद अगर किसी के कुछ स्थान शेष रह गये हों तो आज ही उन स्थानों के दर्शन अवश्य करें जहां वो गये न हों। जीवन व शरीर का कोई भरोसा नहीं।

प्रत्येक जैन को इन स्थानों पर दान राशि अवश्य भेजनी चाहिए क्योंकि कई कल्याणक तीर्थक्षेत्रों पर सुविधाओं का घोर अभाव है। जैसे कि चन्द्रपुरी, कौशाम्बी, कहाऊँ (काकंदी), कोल्हुआ पहाड़ आदि। आपके यहां कोई शुभ कार्य हो जैसे कि विवाह, जन्मदिन, गृह प्रवेश, आदि-आदि को इन चौबीस स्थानों के लिए दान-राशि का कोटा अवश्य बनायें। चाहे राशि कितनी भी छोटी क्यों न हो। मैं जैन धर्म की सभी संस्थाओं के संस्थापकों से कहना चाहूंगा- इन चौबीस स्थानों के लिए बैंक में एक सेन्ट्रल एकाउन्ट होना चाहिए जो स्टेट बैंक आफ इंडिया में हो तो अच्छा है क्योंकि एस.बी.आई. प्रत्येक शहर व गांव में है, जिससे कि प्रत्येक जैन बंधु इस एकाउन्ट में दान राशि जमा कर सकें। यह पैसा उन स्थानों पर लगे जहां कुछ नहीं है। जैसे भोंदल (शीतलनाथ का गर्भ जन्म कल्याणक) गया से लगभग 50 कि.मी. दूर। मिथिलापुरी (जनकपुरी) नेपाल में। उसके बाद वहां लगे जहां सुविधाओं का अभाव है। हमारे जैन धर्म का इतिहास तो इन चौबीस स्थानों पर ही है। भोंदल में श्वेताम्बर मंदिर व धर्मशाला का कार्य प्रगति पर है।

महाभारत के समय मिथिलापुरी पूरी तरह खण्डहर में बदल गयी थी। सन् 1910 में टीकमगढ़ के राजा ने जानकी भवन बनवाकर मिथिलापुरी को जीवित किया। अब हमको भी चाहिए कि तीर्थंकर मल्लिनाथ व नमिनाथ को समर्पित एक जिनालय व धर्मशाला का निर्माण होना चाहिए। उन चौबीस स्थानों के नाम का विवरण जहां- 120 कल्याणक हुए-

वर्तमान कल्याणक स्थान	प्राचीन नाम	कल्याणकों की संख्या
1. श्री सम्मेदशिखर	मधुबन	20
2. अयोध्या		18
3. हस्तिनापुर		12
4. जनकपुर	मिथिलापुरी	8
5. वाराणसी	काशी, बनारस	7
6. भागलपुर	चम्पापुर व मंदारगिरि	5
7. सारनाथ	सिंहपुरी	4
8. चन्द्रावती	चन्द्रपुरी	4
9. कम्पिल		4
10. श्रावस्ती		4
11. रौनाही	रतनपुरी	4
12. खुखुंदू व कहाऊँ	काकंदी	4
13. राजगीर	राजगृही	4
14. कुण्डलपुर	कुण्डग्राम	3
15. गिरनार		3
16. भोंदल	भद्रिलापुरी	2
17. कोल्हुआ पहाड़		2
18. पावापुर		2
19. इलाहाबाद	प्रयाग	2
20. कौशाम्बी		2
21. प्रभाषगिरि	पभोसाजी	2
22. शौरीपुर		2
23. अहिक्षेत्र		1
24. बद्रीनाथ	कैलाश पर्वत श्रृंखला	1

किसी भी जैन बंधु को इन स्थानों की विस्तार से जानकारी चाहिए तो मुझसे बात कर सकता है या लिख सकता है। मेरा मोबाइल नं. 94116 14340 है।

धन से सुविधायें मिल सकती हैं सुख नहीं।

कुंडलपुर भगवान आदिनाथ (बड़े बाबा) तीर्थ स्थल के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट के फैसले पर संत शिरोमणि प.पू.आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का ऐतिहासिक उद्बोधन

बड़े बाबा कुण्डलपुर का मैं भी छोटा भक्त हूँ - पू. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज

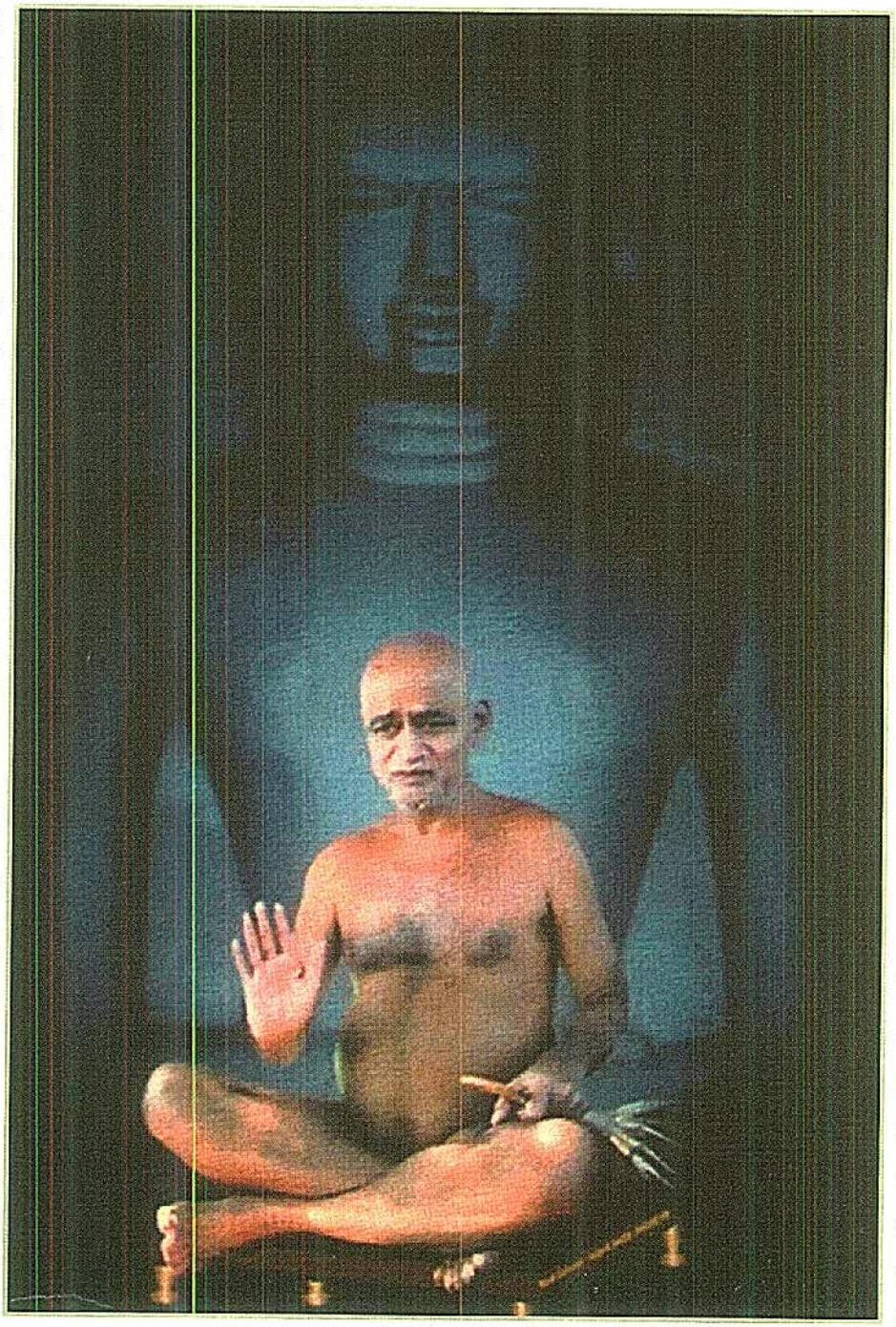

इंदौर। भक्त वर्षों से बड़े बाबा को जिस रूप में देखना चाहते हैं आज वह भावना पूरी हो गई है। अनेकों भक्तवाले बड़े बाबा के दरबार में मैं भी एक छोटा सा भक्त हूँ। हमेशा भगवान बड़े होते हैं भक्त छोटे। भक्ति के विषय में बातें कहने की बजाय आराधना करने की होती है जिसमें तन, मन, धन से सब न्यौछावर करना पड़ता है। बड़ों का काम बड़ा होता है, छोटे लोग आकुलित हो जाते है और उनमें भक्ति भावना तो होती है और आज वह भावना फलीभूत हुई है। यह जानकारी दयोदय चेरिटेबल फाउण्डेशन ट्रस्ट, इंदौर के महामंत्री श्री संजय जैन (मैक्स), उपाध्यक्ष श्री कमल अग्रवाल ने देते हुए बताया कि कुण्डलपुर बड़े बाबा तीर्थ स्थल के निर्माण के लिये मिली सुप्रीम कोर्ट की अनुमति को लेकर आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने नेमावर में धर्मसभा में प्रवचन देते हुए कहे। आचार्यश्री ने कहा कि जब तक हम परीक्षा नहीं देंगे तब तक उसका परिणाम भी नहीं आयेगा। इसलिए ऐसा परिणाम लाना है जिससे विश्व को पता चल जाये कि ऐसी भी परीक्षा हुई है और ऐसा परिणाम भी आता है। परिश्रम का फल हमेशा मिलता है और प्रभु भक्ति सेवा के इस दिशा में अनंत गुना फल मिल जाता है। आज सभी भक्त लोग आनंद का अनुभव कर रहे हैं। बड़े बाबा का क्षेत्र तो विश्व भर में है इसलिये सभी आनंदित हैं। सर्वोच्च न्यायालय में इसका रूप देखने को मिला, जहाँ धर्म से कोई प्रयोजन नहीं रहता, किन्तु वहाँ की बात सभी को मान्य रहती है। उनके भक्तों की बात थी आज वह विघ्न दूर हो गया। ध्यान रखना कि भगवान की न हार होती है और न जीत होती है। भगवान ने तो अपने आप को जीत लिया है। भक्त उनको आदर्श के रूप में रखता है। हम अपने आपको देखने का प्रयास कर रहे है। अहिंसा धर्म भाव परक धर्म है। भगवान ने अनंतकाल के व्यवधान को दूर करके अपना कल्याण किया वह कितना महत्वपूर्ण है। आज देव लोग भी चमत्कृत हो रहे होंगे। भक्ति के कार्य में साथ दे रहे होंगे। गुरु कृपा से यह बात घटित हुई है। गुरुदेव ज्ञान सागर जी महाराज का आशीर्वाद फलीभूत हुआ है। श्री संजय मैक्स एवं श्री कमल अग्रवाल ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट दिल्ली के फैसले के पश्चात कुण्डलपुर तीर्थ का निर्माण तेजी से आकार लेगा।

- संजय जैन (मैक्स), इंदौर

जहां सत्य होता है वहां अहिंसा होती है ।

धर्म महोत्सव के साथ तीर्थक्षेत्र

- डॉ. पी.सी.जैन, चकराघाट, सागर

इकीसवीं सदी के प्रारम्भ होने के पहले धर्मयुग प्रारम्भ होने की पूरी जमीन तैयार हो गई, भारत का हर धर्म, धर्मोत्सव की भीड़ में शामिल हो गया। नये तीर्थों का सृजन प्रारम्भ हुआ, धर्म गुरुओं की संख्या बढ़ी। वैभव, सम्पन्नता से ओत-प्रोत आयोजन जगह-जगह लगातार होने लगे। जैन-धर्म भी इस परिवर्तन में शामिल है। वातावरण का परिवर्तन सभी जगह होता है। हवा सब जगह जाती ही है।

जैन संस्कृति में - जिन दर्शन-मूल में है। जैन मंदिर आत्म चेतना के उत्थान का प्रेरणा स्थल है। आयोजन चाहे धार्मिक हो चाहे सामाजिक हो, के समाचार जैन जन तक पहुंचाने का सहज माध्यम है। वहां के सूचना-पट्ट, रथ महोत्सव, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा, कल्पद्रप-विधान, सिद्धचक्र विधान आदि के आयोजन-सूचना के आकर्षक आमंत्रण-पत्र, सूचना से सदैव पटे रहते हैं। चातुर्मास अवधि जो आत्म चिंतन, मनन, त्याग, अध्ययन, अध्यापन का काल होता है, के साधु संघ, के चारों माहों के कार्यकाल की सारणी से युक्त, चित्रमय रंगीन, सूचना, आकर्षक बड़ी साइज में लगी होती है। कार्यक्रम का प्रारम्भ कलश स्थापना से होता है एवं समापन चातुर्मास निष्ठापन, पिच्छी परिवर्तन पर पहुंचता है। बीच की अवधि में, दीक्षा दिवस, आचार्य दिवस, गुरु-दिवस, दशलक्षण-पर्व, संस्कार शिविर के साथ नई रचना के प्रकाशन पर विमोचन, एवं विद्वानों का चिंतन जन-जन तक पहुंचाने के भाव से रचना-क्रम/किसी विशेष प्रकाशन को मूल में रखकर संगोष्ठी होती है।

एक सौ के करीब आमंत्रण पत्रिकाओं का बिन्दुवार पाठन के बाद भी आबाद स्वरूप दो-चार को छोड़कर कहीं भी- तीर्थ पर एक भी दिन समर्पित नहीं होता, तीर्थ जैन संस्कृति का सबल स्तंभ है। इन्हीं स्थानों के कारण ही विश्व धर्म संस्कृति में जैन धर्म, जैन संस्कृति दैदीप्यमान स्थान प्राप्त कर पाई है।

पंचकल्याणक महोत्सव- पाषाण को भगवान बनोन का महोत्सव है। तीर्थंकर, आराध्य देव, कर्मस्थली, तपस्थली, समवशरण स्थली, निर्वाण भूमि, मूलतः तीर्थक्षेत्र है, उन्हीं की मूर्तियों के कारण ही होने वाले अतिशय एवं उपलब्धता के कारण अतिशय क्षेत्र की मान्यता, आस्था घर-घर तक पहुंची। महोत्सव जिनसे संबंधित हैं, जिनसे क्षेत्र बने, उनकी चर्चा को समय ही नहीं होता।

सभी धार्मिक महोत्सव, चाहे उनका रूप कोई भी हो, तीर्थक्षेत्रों की चर्चा होना एक सार्थक पहल होती है। होनी ही चाहिये। हर आयोजन में तीर्थ चर्चा एक अंग हो।

प्रत्येक आयोजन में पर्याप्त समय निकटस्थ क्षेत्र की पृष्ठभूमि, इतिहास, क्षेत्र की वर्तमान स्थित, जीर्णोद्धार एवं अन्य होने वाले विकास कार्य पर दिया जाना चाहिए। अर्थ संचय ही मूल में न हो, लोगों को क्षेत्र के प्रति ज्ञान बनाने का भाव हो एवं वहां की समस्याओं की चर्चा के साथ ही समाधान का क्रियात्मक योजना हो।

चातुर्मास काल में, राष्ट्रीय, प्रांतीय, स्थानीय क्षेत्रों पर अलग-अलग दिन चर्चा हो, विकास को गति मिले। व्यवस्था में समयानुकूल परिवर्तन की चर्चा हो क्रियान्वयन हो, संबंधित पदाधिकारियों की इस क्रम में सक्रियता एवं भागीदारी लाभदायक फल देगी।

आज सामाजिक, पारिवारिक कार्यक्रमों में परिवर्तन हुआ है। जन्म दिन, विवाह वर्षगांठ, स्मृति दिवस पर आयोजन होने लगे हैं। यह सामाजिक वातावरण बनना चाहिए कि प्रत्येक कार्यक्रम में एक तीर्थक्षेत्र की यात्रा का प्रावधान हो। समारोहों में क्षेत्र की चर्चा से यह वातावरण बनेगा, परिवार में धार्मिक संस्कार बढेंगे। बच्चे तीर्थयात्रा में साथ में रहते ही हैं, अतः प्रारम्भ से ही बच्चों में धार्मिक भावना का विकास होगा।

यह सत्य है कि तीर्थक्षेत्रों के वातावरण में जो विभिन्न आयामों का ज्ञान सहज में अर्जित होता है, वह घर पर मुश्किल से होता है। परिवार का हर सदस्य यह सब तभी आत्मसात करेगा, जब धर्मोत्सव में होने वाली तीर्थक्षेत्र चर्चा से प्रत्यक्ष या परोक्ष में उसका एकाकार होगा। तीर्थस्थलों पर होने वाली धर्म-वर्षा, अनोखी उपलब्धि है ही। अहसास होता ही है।

श्री महावीर ग्रुप ऑफ इण्डस्ट्रीज

संस्थापक एवं निदेशक
दयाचन्द जैन (फ्रीडम फाईटर)
मो. 98141 75293

IN THE SERVICE OF NATION 1973 ESTD.

मैनेजिंग डायरेक्टर
राजेन्द्रकुमार जैन
मो. 98140 92613

जगराओ (पंजाब)	श्री गंगानगर (राजस्थान)	जम्मू (कश्मीर)	कोलकाता (बंगाल)
223191, 223103	2494412	2547876	98304 86979
222 093, 228962	2494413	2547239	99973 4272

जिन धर्म गुणों की उपासना करता है व्यक्ति की नहीं।

स्वदेश भूषण जैन बने भगवान महावीर स्मारक समिति के अध्यक्ष

दिल्ली। जैन समाज के वरिष्ठ नेता एवं जाने माने समाज सेवी स्वदेश भूषण जैन को भगवान महावीर स्मारक समिति का राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वसम्मति से चुना गया। श्री जैन का चुनाव 4 मई को संस्था के मुख्य संरक्षक साहू अखिलेश जैन के निवास पर आयोजित कार्यकारिणी की बैठक में किया गया।

बैठक में साहू अखिलेश जैन के साथ–साथ जस्टिस बिजेन्द्र जैन, श्री एस0 के0 जैन आई पी एस, तीर्थ क्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री पंकज जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुखमाल चंद जैन देहरादून, राष्ट्रीय महामंत्री विपिन जैन सर्राफ मेरठ, वरिष्ठ पत्रकार स्वराज जैन, सतीश जैन (एससीजे), राकेश जैन आदि उपस्थित रहे।

ज्ञातव्य है कि भगवान महावीर की जन्म भूमि वैशाली पर एक भव्य जैन मन्दिर एवं स्मारक का निर्माण भगवान महावीर स्मारक समिति द्वारा आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से जिसका पंचकल्याणक हाल ही में एलाचार्य श्री श्रुत सागर जी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ है। इस स्थान को ऐतिहासिक अभूतपूर्व दर्शनीय बनाने के लिए नवनियुक्त अध्यक्ष ने समस्त जैनाचार्यों, मुनियों आर्थिकाओं साधू साधवियों का आशीर्वाद और समस्त समाज के सहयोग की प्रार्थना की। नवनिर्वाचित अध्यक्ष स्वदेश भूषण जैन ने समिति के लिए

मार्गदर्शन मण्डल का गठन किया है जिसके चैयरमैन जस्टिस बिजेन्द्र जैन रहेंगे। श्री रतन लाल जैन गंगवाल पटना को मंत्री एवं सुरेन्द्र जैन गंगवाल पटना को कोषाध्यक्ष, सतीश जैन (एससीजे) को अध्यक्ष वित्त और श्री राकेश जैन को अध्यक्ष निर्माण समिति घोषित किया गया।

स्वराज जैन

09899614433

डॉ. इन्दु जैन महावीर पुरस्कार से पुरस्कृत

श्रीमहावीरजी! अनेक पुरस्कारों से सम्मानित, आकाशवाणी एवं दूरदर्शन में उद्घोषिका विदुषी श्रीमती डॉ. इन्दु जैन (धर्मपत्नी श्री राकेश जैन, नई दिल्ली) को उनके ग्रंथ ''शौरसेनी प्राकृत भाषा और साहित्य का इतिहास'' पर इक्यावन हजार रुपये की सम्मान राशि के साथ 'महावीर पुरस्कार–2012' प्रदान किया गया। जैन विद्या संस्थान श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी कमेटी द्वारा अनेक वर्षों से प्रदान किया जाने वाला यह प्रतिष्ठित सम्मान 16 अप्रैल 2014 को क्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष न्यायाधीश श्री नरेन्द्र मोहन कासलीवाल, निदेशक प्रो. कमलचंद सोगानी, मंत्री महेन्द्र कुमार पाटनी तथा गणमान्य अन्य पदाधिकारियों ने प्रशस्तिपत्र, सम्मान राशि के साथ प्रदान किया ।

पुरस्कृत ग्रंथ 450 पृष्ठों में तथा 10 अध्यायों में विभक्त है, जो कि 2011 में संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी से प्रकाशित है। डॉ. इन्दु जैन 'जैन राष्ट्र गौरव', राष्ट्रीय पत्रकारिता सम्मान व जैन धर्म के प्रतिनिधित्व के लिए पूर्व राष्ट्रपति द्वारा 'फेथ लीडर अवार्ड' आदि अनेक सम्मानों से सम्मानित हैं। डॉ. इन्दु जैन अ.भा.दि.जैन विद्वत परिषद के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. फूलचंद प्रेमी, वाराणसी की सुपुत्री एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली की बहिन है। डॉ. इन्दु जैन के पुरस्कृत होने पर अनेक स्नेहीजनों ने उन्हें हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की है ।

उल्लेखनीय है कि पुरस्कृत ग्रंथ में दिगम्बर जैन परम्परा के अर्थात् शौरसेनी प्राकृत साहित्य के उपलब्ध एवं दुर्लभ प्रायः सभी ग्रंथों का, उनके विभिन्न पक्षों सहित विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। यह ग्रंथ सभी शोधार्थियों, पुस्तकालयों एवं जिज्ञासुओं के लिये अत्यन्त उपयोगी है, जिसे प्रकाशन विभाग सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्याल, वाराणसी से मंगाया जा सकता है।

– अनुपमा राजेन्द्र जैन
सनावद

दिगम्बर जैन मंदिर श्री नेमीनाथजी (सॉवलाजी) आमेर

भूतपूर्व जयपुर रियासत की प्राचीन राजधानी आमेर के खोर दरवाजा के पास दिगम्बर जैन नसियॉ कीर्ति स्तम्भ स्थित है। इस नसियॉ में मूल नायक भगवान विमलनाथ की पाषाण की प्रतिमा विराजमान है तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में विख्यात आमेर की गद्दी के भट्टारकों का कीर्तिस्तम्भ भी स्थापित है। यह स्तम्भ 12 फीट 5 इंच ऊँचा है तथा इसकी गोलाई 4 फीट 7 इंच है, स्तम्भ मकराना का है। इस स्तम्भ के 10 भाग किये गये हैं। एक-एक भाग में चारों ओर भट्टारकों की 12-12 मूर्तियाँ खडगासन/पदमासन उत्कीर्ण है। इसमें खडगासन के हाथ में कमण्डलु है। इसमें 101 भट्टारकों की मूर्तियों के सम्वतोल्लेख हैं। इसमें मूल संघ के दिगम्बर आम्नाय के भट्टारकों का विवरण है।

इसी नसियॉ पर पहले गुम्बद नहीं था। प्रबंधकारिणी कमेटी, दिगम्बर जैन मंदि श्री नेमीनाथजी (सॉवलाजी) आमेर ट्रस्ट ने नसियॉ पर गुम्बद बनवाकर कलशारोहण व ध्वजारोहण का दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया। दिनांक 4 फरवरी, 2014 को प्रातः नसियाँ परिसर में भट्टारकों द्वारा रचित हस्तलिखित ग्रन्थों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, मुख्य न्यायाधीश सिक्किम, उच्च न्यायालय द्वारा किया गया। यह प्रदर्शनी जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी एवं श्री दिगम्बर जैन मंदिर महासंघ द्वारा संयुक्त रूप से लगाई गई। इस दिन वसंत पंचमी थी जो कि आचार्य कुन्दकुन्द का जन्म दिवस है। इस दिन प्रबधंकारिणी कमेटी के सबसे वरिष्ठ सदस्य **श्री सुभद्रकुमार जी पाटनी, श्री नगेन्द्र कुमार जी जैन, श्री नरेश कुमार जी सेठी, श्री राजकुमार जी काला, श्री नरेन्द्र कुमार जी पाटनी, श्री बलभद्रकुमार जी जैन, श्री पूनमचन्द्र जी शाह, श्री महेन्द्र कुमार पाटनी, डॉ. कमलचन्द जी सोगानी, श्री नवीन कुमार जी बज, श्री सुधांशु जी कासलीवाल, श्री सुभाष जी जैन** आदि उपस्थित थे।

दिनांक 05 फरवरी, 2014 को प्रातः दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के अध्यक्ष माननीय श्री नगेन्द्र कुमार जी जैन, पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय द्वारा झण्डारोहण किया गया। कार्यक्रम संयोजक एवं क्षेत्र कमेटी के कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार जी पाटनी द्वारा नसियाँ के बारे में व समारोह की जानकारी दी गई तथा क्षेत्र कमेटी के मानद मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी जैन द्वारा सभी का स्वागत किया गया। तत्पश्चात नित्यमह अभिषेक, शांतिधारा, पूजन, याग मण्डल विधान पूजन, विश्व शांति महायज्ञ (हवन) किया गया। कलशारोहण एवं ध्वजारोहण के पुण्यार्जक **श्री पूनमचन्द्र जी-श्रीमती प्रभावती जी शाह परिवार थे। श्री पूनमचन्द्र जी शाह क्षेत्र के संयुक्त मंत्री प्रथम भी थे। इस कार्यक्रम के पश्चात जिनेन्द्र अभिषेक व माल हुई। सौधर्म इन्द्र श्री पूनमचन्द्रजी-श्रीमती प्रभावती जी शाह, यज्ञानायक श्री शांतिलाल जी पाटनी-श्रीमती राज देवी जी पाटनी, ईश इन्द्र श्री तरुण जी कासलीवाल-श्रीमती प्रीति जी कासलीवाल, सानद इन्द्र श्री योगेशकुमार जी टोडरका-श्रीमती सुनीता जी टोडरका, माहेन्द्र इन्द्र श्री नरेन्द्र कुमार जी पाटनी-श्रीमती सरोज जी पाटनी, धनपति कुबेर श्री भागचन्द जी शाह-श्रीमती उर्मिलाजी शाह थे।**

इस अवसर पर दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी के **पूर्व अध्यक्ष श्री नरेश कुमार जी सेठी, उपाध्यक्ष श्री राजकुमार जी काला, श्री नरेन्द्र कुमार जी पाटनी, श्री बलभद्रकुमार जी जैन, श्री नवीनकुमार जी बज, डॉ. कमलचन्द्र जी सोगानी, श्री सुधांशु जी कासलीवाल, श्री सुभाष जी जैन** आदि उपस्थित थे। विधानाचार्य पं. मुकेश जी जैन 'मधुर' शास्त्री श्री महावीरजी थे। दोनों दिन के कार्यक्रमों में श्री पूनमचन्द्र जी शाह का पूर्ण सहयोग रहा।

- महेन्द्र कुमार पाटनी, जयपुर
संयोजक-अन्य मंदिरान व्यवस्था सगि

देश के मूर्धन्य लेखक द्वारा लिखित आचार्य विद्यानंद की जीवनी लोकार्पित

ज्ञानवृद्ध, आयु-वृद्ध, तप वृद्ध श्वेतपिच्छाचार्य श्री विद्यानंदजी मुनि महाराज के 90वें अवतरण-दिवस पर कुन्दकुन्द भारती दिल्ली में एक विशाल आयोजन के अंतर्गत श्री सुरेश जैन हौजखास ने दीप-प्रज्ज्वलन एवं श्री अर्जुन जैन, श्रीमती संगीता जैन, श्री नरेन्द्र जैन, श्रीमती नीरा जैन ने पाद-प्रक्षालन किया। शास्त्र भेंट श्री अरुण जैन ने। मुख्यातिथि पू. भट्टारक श्री देवेन्द्रकीर्ति जी, अध्यक्ष श्री संजीव जैन पंचशील एवं स्वागताध्यक्ष श्री एस.के.जैन पंचशील थे।

प्रथम चरण में पांच पृथक-पृथक कलादि क्षेत्र के व्यक्तित्वों का सम्मानपत्र एवं सम्माननिधि भेंट कर अभिनंदन किया गया जो श्री रवीन्द्र जैन मुंबई स्वरसाधक, डॉ. शशिप्रभा जैन दिल्ली, डॉ. रमेश जैन, श्रीमती शकुन्तला जैन जयपुर एवं श्री रमेशचन्द जैन दिल्ली हैं।

अंतिम चरण में महान समाजसेविका श्रीमती सरयू दफ्तरी की शाकाहार विषयक पुस्तक एवं मूर्धन्य कथाशिल्पी श्री सुरेश जैन सरल के ग्रन्थ 'अहो जगत गुरुदेव' का लोकार्पण पू. आचार्यश्री विद्यानंद के कर-कमलों से सम्पन्न कराया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने जीवनी 'अहो जगत गुरुदेव' दर्शकों को दिखलाते हुए कहा कि सुरेश जैन सरल ने बहुत अच्छा ग्रन्थ लिखा है, उन्हें आशीर्वाद। श्री रवीन्द्र जैन के गीत-संगीत और स्नेह-भोज के साथ कार्यक्रम समाप्त किया गया। मंच का इन्द्रधनुषी संचालन डॉ. वीर सागर जैन एवं श्री सतीश जैन आकाशवाणी ने किया।

- चंद्रशेखर जैन, जबलपुर

स्वाध्याय करने से साधना में निखार आता है।

श्री प्रमोद जम्मनलाल कासलीवाल, औरंगाबाद महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष निर्वाचित

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार दिनांक 8 जून, 2014 को श्री 1008 चिंतामणी पार्श्वनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कचनेर के स्व. श्रीमती धन्नाबाई दीपचंद गंगवाल टेक्निकल हाईस्कूल में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महाराष्ट्र अंचल के अध्यक्ष का चुनाव संपन्न हुआ। चुनाव की सभी कार्यवाही श्री पी.के. जैन रिटायर्ड डी.जी.पी. महाराष्ट्र के निर्देशन में शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में राष्ट्रीय मंत्री-खुशालचंद जैन-सी.ए. उपस्थित थे।

चुनाव मैदान में दो उम्मीदवार थे-

1. श्री दिलीप प्रभाकरराव घेवारे, मुंबई.
2. श्री प्रमोद जम्मनलाल कासलीवाल, औरंगाबाद.

चुनाव में भाग लेने के लिए लोगों ने हवाई जहाज, लक्जरी बसों, कारों, रेलों का उपयोग किया। 8 जून की प्रातः 8.00 बजे श्री कचनेर क्षेत्र का पूरा परिसर बसों एवं कारों से भरा हुआ था। औरंगाबाद, परभणी, नागपुर, इचलकरंजी, मुंबई, अहमदनगर, अमरावती, बीड, चंद्रपुर, बुलढाणा, हिंगोली, जलगांव, लातुर, मानवत, नांदेड, नाशिक, पुणे, सातारा, सोलापुर, वाशिम, उस्मानाबाद, सांगली, कोल्हापुर, जालना आदि स्थानों से हजारों की संख्या में लोग चुनाव में भाग लेने के लिए उपस्थित हुए थे। वहाँ पधारनेवाले सभी लोगों के लिए जलपान एवं शुचि भोजन की सुंदर व्यवस्था स्व. श्रीमती सुशीलादेवी जम्मनलाल कासलीवाल के स्मरणार्थ हस्ते श्री प्रमोदकुमार-श्री मनोजकुमार कासलीवाल की ओर से की गई थी जिसका लोगों ने भरपुर लुत्फ उठाया।

दिनांक 8 जून को चुनाव अधिकारी के निर्देशानुसार एक सभा मंडप में दोनों प्रत्याशियों के साथ भारी संख्या में मतदाता उपस्थित हुए चुनाव अधिकारी के संबोधन के पश्चात् दोनों उम्मीदवारों ने सभी मत दाताओं से आशीर्वाद प्राप्त करने का निवेदन किया। पश्चात् चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ हुई। चुनाव निष्पक्ष कराने के लिए ठोस इंतजाम किये गये थे। प्रवेश द्वार पर मत दाताओं से उनका ओरिजनल परिचय पत्र लेकर उसकी फोटो कॉपी करके उन्हें मतदान करने के लिए अंदर भेजा जाता था, जहाँ चुनाव अधिकारी के साथ पोलिंग एजेन्ट मौजुद थे उनके साथ दोनों प्रत्याशियों के प्रतिनिधि भी मौजुद थे। सभी पोलिंग एजेन्टों को मतदाता सूची उपलब्ध कराई गई थी। उसकी छानबीन होने के पश्चात् मतदाता को मत-पत्र दिया जाता था जिसका उपयोग करके वह अपना मत सामने रखे हुए मुहरबंद बॉक्स में डाल देता था। यह सिलसिला 3.00 बजे तक चला। पश्चात् चुनाव अधिकारी द्वारा सील किये गये मत पेटियों को खोलकर उनकी मत गणना की गई।

कुल मत पडे	427
मत-पत्र अस्वीकृत किये गये	- 3

424 मतों में से 236 मत श्री प्रमोद कासलीवाल को मिले तथा 188 मत श्री दिलीप प्रभाकरराव घेवार को मिले। श्री प्रमोद जम्मनलाल कासलीवाल को अधिक मत प्राप्त होने से चुनाव अधिकारी ने उन्हें विजयी घोषित किया।

चुनाव की कार्यवाही पूर्ण होने पर जैसे ही चुनाव अधिकारी ने परिणामों की घोषणा की वैसे ही बधाई देने वालों का तांता लग गया। सभी गाजे बाजे के साथ मंदिरजी में दर्शनार्थ पधारे इसके पश्चात् यह जुलूस सभा में परिवर्तित हो गया। श्री संतोषकुमार जैन पेंढारी की अध्यक्षता में अधिवेशन की कार्यवाही आगे बढाई गई। सर्व प्रथम महाराष्ट्र अंचल की ओर से नव निर्वाचित अध्यक्ष- श्री प्रमोद जम्मनलालजी कासलीवाल को शाल, श्रीफल एवं माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया गया। पश्चात् पूर्व अध्यक्ष- श्री संतोषकुमार जैन पेंढारी, मंत्री- श्री अनिल जोहरापुरकर एवं श्री नीलम अजमेरा ने सभी मतदाताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए नव निर्वाचित अध्यक्ष को यह आश्वासन दिया कि हम सभी आपके साथ हैं और सभी मिलकर महाराष्ट्र के तीर्थों का संरक्षण, संवर्धन करेंगे। तद्नंतर सभा सधन्यवाद विसर्जित हुई।

अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है : आचार्य विद्यानन्द मुनि

22 अप्रैल, 2014, नई दिल्ली। परमपूज्य श्वेतपिच्छाचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज की 90वीं जन्म जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने कहा कि -दुनिया में हिंसा सबसे बड़ा धर्म है, इसे सभी मानते हैं, इसके पालन से ही व्यक्ति, समाज व राष्ट्र को सुख-शांति मिल सकती है। ज्ञान ही जीवन का सार है। विद्वान सर्वत्र पूजनीय होता है। पापी का भी तिरस्कार मत करो उसे धर्म सिखाओ, सुधारो।

समारोह के मुख्य अतिथि हुमचा के भट्टारक स्वस्तिश्री देवेन्द्रकीर्ति जी थे। सभा के शुभारम्भ में परमपूज्य आचार्यश्री जी का पाद-प्रक्षालन, पुष्प-वृष्टि, नवीन पिच्छी एवं शास्त्र भेंट किए गए। परमपूज्य एलाचार्यश्री श्रुतसागरजी, परमपूज्य एलाचार्यश्री प्रज्ञसागरजी, पूज्य उपाध्याय सौभाग्य सागरजी, पूज्य मुनिश्री विभंजनसागरजी, पूज्य गणिनी आर्यिकाश्री प्रज्ञमति माताजी का भी समारोह को आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर कुन्दकुन्द भारती द्वारा प्रवर्तित **संगीत समयसार पुरस्कार** फिल्म जगत के सुप्रसिद्ध संगीतकार एवं गीतकार श्री रवीन्द्र जैन, **आचार्य उमास्वामी पुरस्कार** डॉ. शशि प्रभा जैन (पूर्व कुलपति-श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली), **आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांतचक्रवर्ती पुरस्कार** डॉ. रमेशचन्द, बिजनौर, **ब्राह्मी पुरस्कार** अपभ्रंश अकादमी जयपुर में कार्यरत श्रीमती शकुन्तला जैन (जयपुर), **चारित्रचक्रवर्ती पुरस्कार** विगत 40 वर्षों से सामाजिक कार्यों में संलग्न श्री रमेशचन्द जैन (लक्ष्मी नगर, दिल्ली) को गोल्ड मेडल, प्रशस्ति-पत्र, शॉल व एक-एक लाख की सम्मान राशि देकर सम्मानित किया गया।

सभाध्यक्ष श्री संजीव जैन (ऋषभ ग्रुप), कुन्दकुन्द भारती के अध्यक्ष साहूश्री अखिलेश जैन एवं महामंत्री श्री मुकेश कुमार जैन, कुन्दकुन्द भारती न्यास के सभी न्यासीगण, दिल्ली जैन समाज के अध्यक्ष श्री चक्रेश जैन सहित, बाहर से पधारे महानुभावों ने पूज्य आचार्य संघ के प्रति अपनी विनयांजलि प्रकट करते हुए श्रीफल समर्पित किए।

इस अवसर पर आचार्य पूज्यपाद की मूलकृति **इष्टोपदेश** को अंग्रेजी अनुवाद एवं आचार्य जयसेनकृत **महापुराण** का मराठी अनुवाद (द्वितीय भाग), **अहिंसक शाकाहार, अहो! जगतगुरुदेव, वृहत्कथा कोश, कैलेण्डर** एवं बड़ौत में निर्माणाधीन **आचार्यश्री विद्यानन्द वाटिका** के मानचित्र का लोकार्पण हुआ।

सभा में मुंबई से पधारीं पद्मश्री सौ. सरयू दफ्तरी, अशोक साकरलाल शाह परिवार के सदस्यगण, कोथली क्षेत्र, बड़वानी क्षेत्र, गोम्मटगिरि क्षेत्र के अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारियों ने कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की।

भाई रविन्द्र जैन मुंबई जिस समय अपने गीतों को प्रस्तुत कर रहे थे। 1500 से भी अधिक श्रोता मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे, उनको निहार रहे थे। 'मंगलाचरण' प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन, आरम्भ में भजन श्री प्रदीप जैन एवं सभा संचालन श्री सतीश जैन (आकाशवाणी) ने किया।

- सतीश जैन (आकाशवाणी), दिल्ली

धर्म वही है जो जीने की कला सिखलाता है।

श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र कोठी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं विश्व शांति महायज्ञ सानन्द सम्पन्न

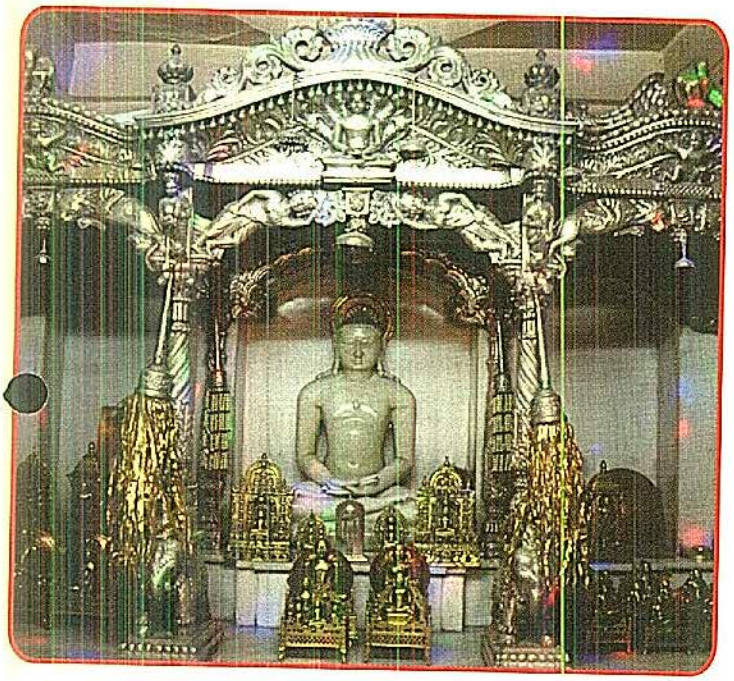

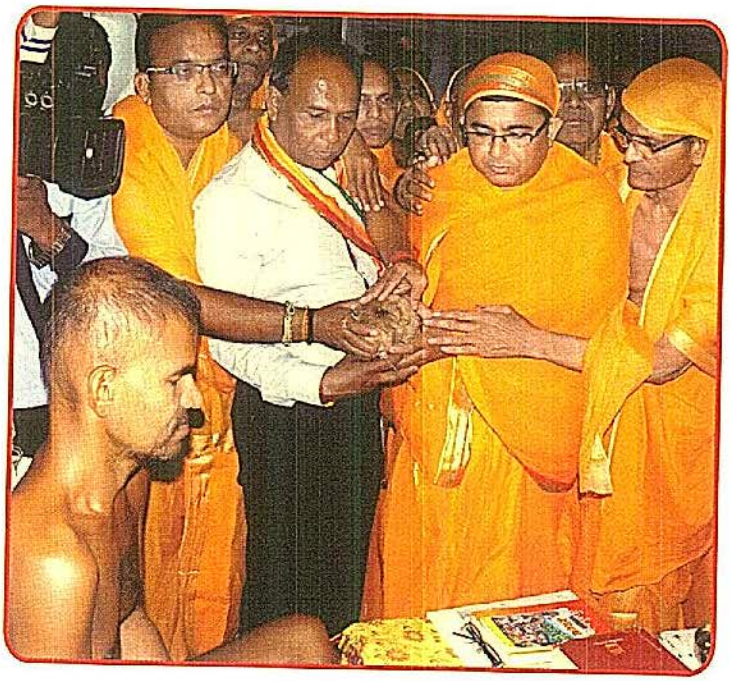

गुजरात में श्री तारंगाजी दि. जैन सिद्धक्षेत्र कोठी आयोजीत श्री. 1008 नेमिनाथ जिन बिम्ब पंच कल्याणक प्रतिष्ठा एवं विश्वशांति महायज्ञ दि. 21/03/2014 से 24/03/2014 तक प.पू गिरनार उपसर्ग विजेता दिव्यमुनि, चितंनमुनि 108 श्री प्रबलसागरजी एवं प.पू. मुनिश्री कीर्ती सागरजी महाराज ससंघ के सानिध्य में सताधिक प्रतिष्ठा कारक पं.श्री सुधीर मार्तंड-रुषभदेव (केसरीयाजी) वाले के तत्वाधानमें सानन्द सम्पन्न हुआ ।

दि. 31-03-2010 को तारंगाजी की कोटीशीला से भ.नेमिनाथ एवं भ.बाहुबली की मूर्ति चोरी हुई थी। और नेमिनाथ भगवान की मूर्ति खंडित कर दी गई थी । इस स्थान पर नई प्रतिमाजी बिराजमान करने का निर्णय कमिटी द्वारा कीया गया । और इस संदर्भ में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन कीया गया । इस प्रतिष्ठामें भ. नेमिनाथ की नई प्रतिमाजी के दाता श्री आर. के.जैन (पूर्व अध्यक्ष तीर्थ क्षेत्र कमीटी) द्वारा दिप-प्रज्जवलन एवं ध्वजा-रोहण कीया गया । सौधर्म ईन्द्र श्री सुरेशभाई डी. गांधी (दांता) सुरत-सहित सौभाग्यशाली 51 ईन्द्र-ईन्द्राणी परिवार ने भाग लीया

भ. बाहुबली की मूर्ति -धिरजबेन मणीलाल शाह तलोद श्री. सुभाषभाई श्री सुनिलभाई बिराजमान कर्ता थे । अद्वितीय जनमेदनी के सहयोग से एवं कमिटी के प्रबल पुरुषार्थ से श्री. तारंगाजी की यह प्रतिष्ठा एक नया ईतिहास बन गई। इस अवसर पर यहाँ पू.श्री व वरांगकेवली नई प्रतिमा बिराजमान की गई । जिस के दाता ईडर के दोशी प्रतिकभाई छोटालाल परिवार ने लाभ लिया। एवं बीराजमान कर्ता शाह रमणलाल जेठालाल सुरत ने लाभ लिया।

यह पंच कल्याणक प्रतिष्ठा प.पू. गुजरात संतकेसरी आचार्य श्री भरत सागरजी महाराज की पावन प्रेरणा एवं आर्शीवाद से निर्विध्न एवं सानन्द सम्पन्न हुई । पू. गुरुदेव के सानिध्य में होनेवाली यह प्रतिष्ठा के लीए अपने आर्शीवाद देते हुए कहा था की मेरे आर्शीवाद के साथ यह प्रतिष्ठा आप पू. गिरनार उपसर्ग विजेता श्री. प्रबल सागरजी महाराज से करालो । पू. गुरुदेव को मानो संकेत हो गया था की में गुजरात नही पहुंच पाउंगा ।

अरावली पर्वत माला मे दो पहाड कोटी शिला और सिद्ध शिला पहाड़ के बीच पवित्र पावन भूमि पर पाकृतिक सौंदर्य युक्त यह तिर्थ है । सायरदत्त-वरदत्त-वरांग केवली भगवंतो सहित साड़े तीन करोड़ मुनि राजों की निर्वाणभूमि सिद्धक्षेत्र तारंगाजी है । आधुनीक धर्मशाला-भोजनालय कि सुंदर व्यवस्था है । सभी जैन बंधुओ अवश्य तीर्थ लाभ लेने की विनंती है ।

धन साधन है साध्य नहीं । जैसे नाव को चलाने के लिए सरोवर में जल ।

श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र कोठी में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं विश्व शांति महायज्ञ की झलकियाँ ।

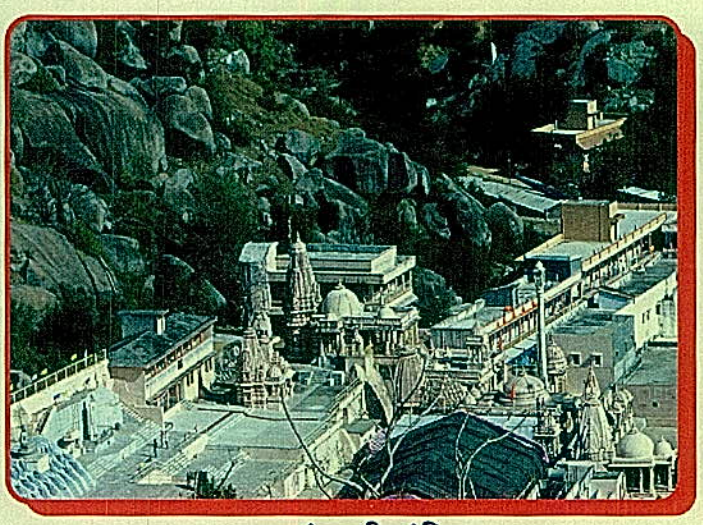

तारंगाजी मंदिर

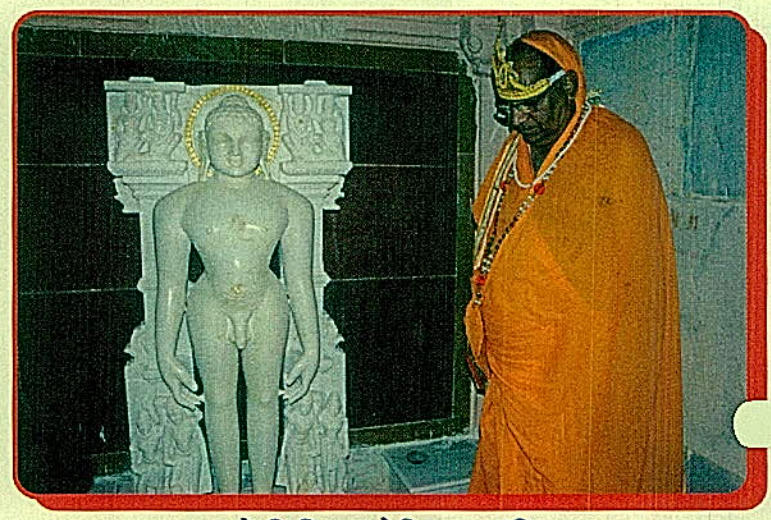

कोटी शिला नेमिनाथ मंदिर

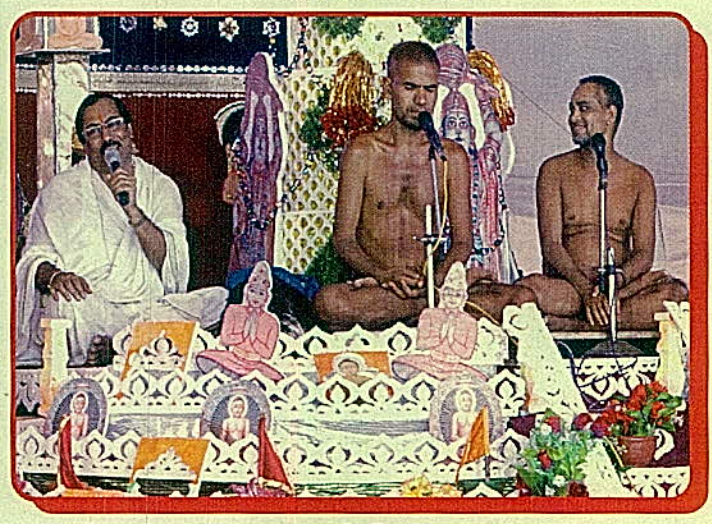

ऊर्जयंतगीरी गिरनार

श्री आर. के. जैन सन्मान दृश्य

श्री. तारंगा क्षेत्र की महिमा अपरंपार । निज स्वभाव जो साधते हो जाते भवपार ।

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है ।

कुण्डलपुर तीर्थक्षेत्र के बारे में
उच्चतम न्यायालय का निर्णय - सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की विजय

पर्याप्त प्रतीक्षा के पश्चात दिनांक 9/5/2014 को देश के माननीय उच्चतम न्यायालय ने दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कुण्डलपुर के विरुद्ध प्रस्तुत याचिकाओं पर अपना निर्णय प्रकाशित कर दिया। निर्णय पढ़कर जानना चाहा कि इस निर्णय में कौन जीता, कौन हारा।

साधारणतया तो निर्णय को देखने से लगता है कि याचिकाकर्ताओं की दोनों याचिकाएं निरस्त कर दी गई हैं। अतः यह स्पष्ट है कि याचिकाकर्ता हार गए और मंदिर ट्रस्ट जीत गया, किन्तु अध्यात्म दृष्टि अंतर्मन की गहराई में डूबने पर पाती है कि कहीं जीतने के अहंकार ने उसकी मृदुता को नष्ट तो नहीं कर दिया है अन्यथा यही तो उसकी आध्यात्मिक पराजय होगी। दोनों पक्ष अहंकार की मीठी और कडवी पीड़ा से पीड़ित होंगे तो दोनों ही पराजित हैं। वास्तव में तो माननीय न्यायाधीशों ने अपने निर्णय में अहंकार पर सर्वथा विजय प्राप्त वीतरागी महाप्रभु भगवान जिनेन्द्र देव की संपूर्ण विजय की धारणा है। हमें बड़े बाबा के चरणों में बैठकर अन्तर्मुखी होकर अपने अहंकार प्रेरित दृष्टि से कृत अविनय, अनादर के परिणामों का प्रायश्चित ग्रहण करते हुए भविष्य में समर्पित भाव से गुणाधारित... भक्ति से तदगुण लब्धये बारम्बार नमोस्तु करना चाहिए।

इस निर्णय को हमें व्यापक दृष्टि से देखते हुए व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर सम्पूर्ण जैन समाज की विजय की रूप में लेना चाहिए। अनेकांतवादी सिद्धांतों पर श्रद्धा रखने वाला दिगम्बर जैन समाज आंतरिक कतिपय मतभेदों के बावजूद सम्पूर्ण एकता में विश्वास रखता है और इस निर्णय को सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज की हित की दृष्टि से देखता है।

माननीय न्यायाधीशों ने बड़े बाबा के पूर्व मंदिर के जीर्ण-शीर्ण होने के कारण नवीन मंदिर के निर्माण की आवश्यकता को स्वीकार किया और मंदिर के डिजाइन को जैन आगमोक्त होना भी स्वीकार किया। अतः बड़े बाबा की अमूल्य प्रतिमा की सुरक्षा की दृष्टि से ट्रस्ट के द्वारा उठाये गये कदमों को उचित माना। सम्पूर्ण देश की दिगम्बर जैन समाज माननीय न्यायालय के प्रति दिगम्बर जैन प्राचीन भव्य विशाल, प्रतिमा के संरक्षण के लिए उस प्रतिमा के अनुकूल जिनालय के निर्माण को उचित स्वीकार किये जाने के लिए आभार प्रदर्शित करती है।

अन्यत्र भी विषयों में भी मतभेद रखते हुए संगठित एक होकर रहने की और शब्दों में मीठे स्याद्वाद शैली से लेखन की आदत नहीं डालकर हम जैनत्व का तिरस्कार करते हैं। संपूर्ण संसार को मैत्री का पाठ पढ़ाने का गौरव रखने वाले हम जैन अपनी वचन शैली और व्यवहार शैली को अवश्य बदलने का संकल्प लें। कुंडलपुर के प्रकरण में गत दिनों कहीं कभी कड़वी शैली का प्रयोग पारस्परिक जो हम सब भी परस्पर में क्षमा प्रार्थी हैं। हम सभी दिगम्बर जैन एक हैं, एक रहेंगे, संगठित रहेंगे। बड़े बाबा की जय।

- मूलचन्द लुहाड़िया

भव्य पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव, बीनागंज (म.प्र.)

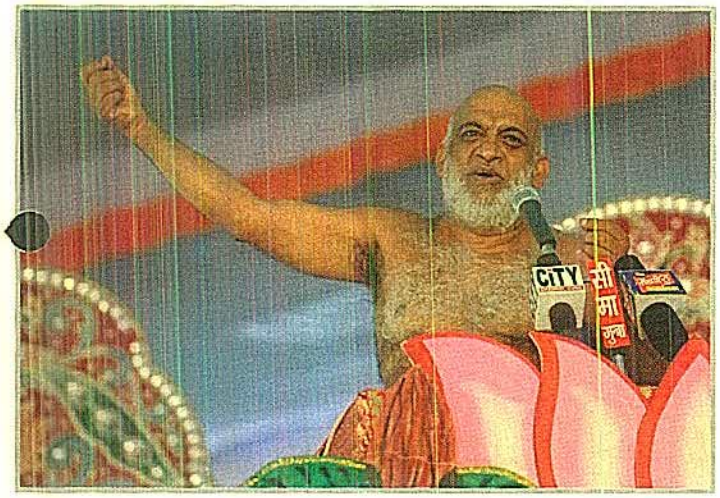

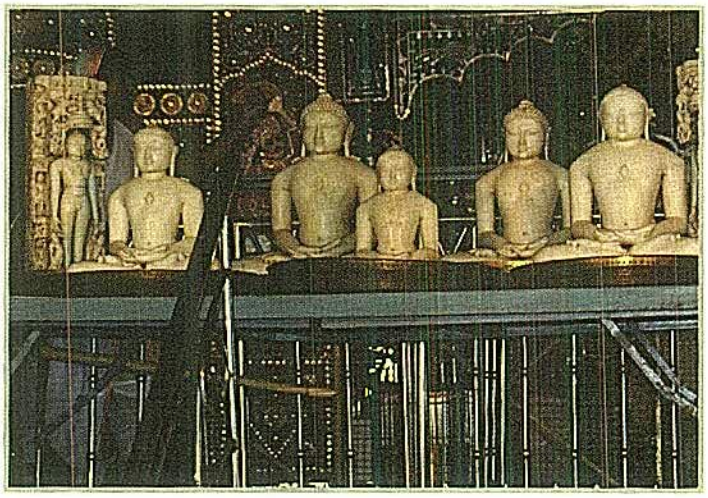

प.पू. संत शिरोमण आचार्य विद्यासागरजी महाराज के प्रभावक शिष्य मुनि पुंगव सुधासागर महाराज के आशीर्वाद से बीनागंज जैन समाज द्वारा भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव अति उल्हास एवं धूमधाम से दिनांक 21 मई से 25 मई तक हजारो श्रध्दालुओं के बीच मनाया गया। पूज्य धैर्यसागरजी, पूज्य गंभीरसागरजी के सान्निध्य में तथा वाणी भूषण ब्र.श्री प्रदीप भैय्याजी प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में संपन्न हुआ। इस पंचकल्याणक में स्व.श्री गोकुलचंदजी के परिवार द्वारा श्री ऋषभकुमार जैन, मनोजकुमार जैन एवं विजयकुमार जैन के द्वारा नेशनल हायवे पर स्थित 20 बीघा जमीन(करोडो रुपये कीमत की) दान स्वरुप समाज को प्रदान की है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाए वह कम है साथ ही 3 मंदिरों के भव्य निर्माण के लिए श्री फुलचंदजी, श्री नंदलालजी एवं मानस्तंभ के निर्माण के लिए प्रतिष्ठित बैनाडा परिवार, आगरा ने पुण्यार्जक बनने का गौरव प्राप्त किया। पूरे समारोह में जैन समाज गुना के गौरवाध्यक्ष श्री अनिल जैन एवं पुण्योदय तीर्थक्षेत्र बजरंगगढ़ के अध्यक्ष श्री एस.के. जैन(कॉन्ट्रैक्टर) का विशेष उल्लेखनीय सहयोग रहा।

धर्म केवल मंदिर में हीं, मूक प्राणियों के ऊपर दया करना भी धर्म है।

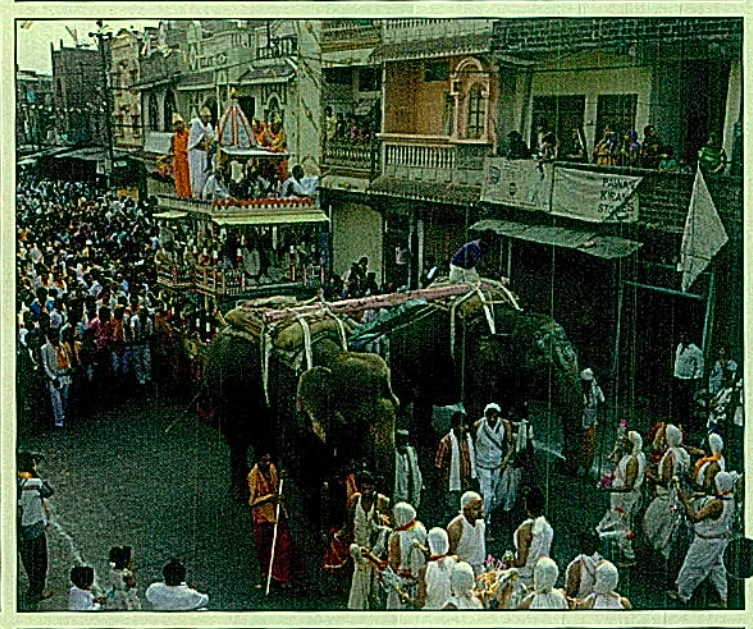

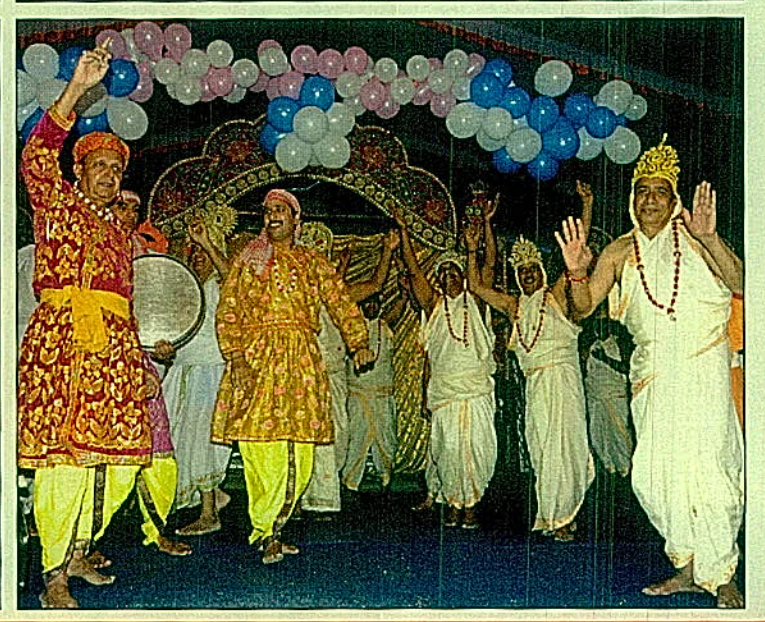

धर्म किसी दुकान पर नहीं मिलता जो पैसे से खरीदा जाये ।

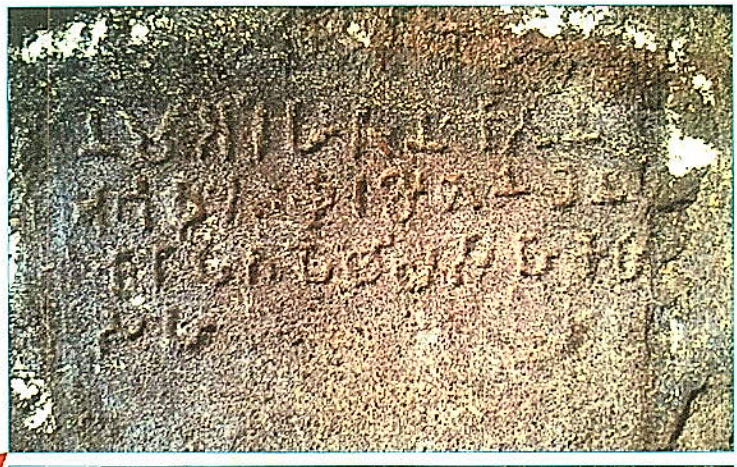

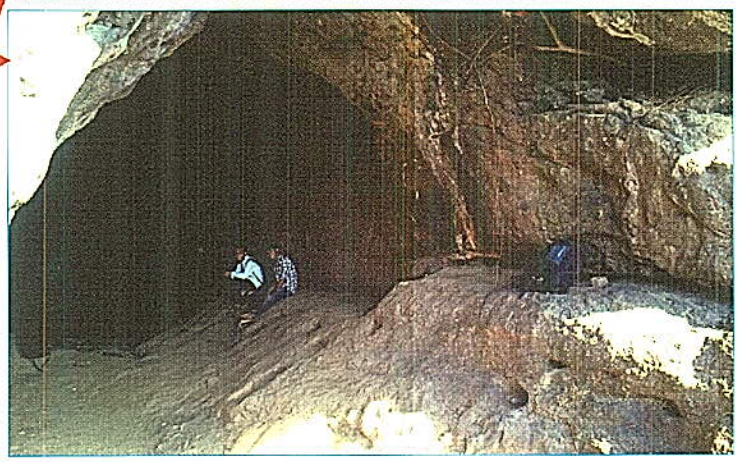

पाले महाराष्ट्र की सबसे प्राचीन जैन गुफा है, जिसका समय ईसा से १९९ सदी पूर्व का माना जाता है। यहाँ पर ब्राह्मी लिपि में णमोकार मंत्र लिखा हुआ है। गुफा के अंदर एक छोटा सा कमरा भी बना हुआ है और गुफा के आखिरी छोर पर एक वेदी जैसा भी कुछ बना हुआ है। णमोकार मंत्र के नीचे एक गढ्ढा बना हुआ है और कुछ सीढियां भी बनी हुई हैं। गुफा आचार्य इन्द्ररक्षित महाराज जी के काल में निर्मित हुई थी। पाले, पुणे से करीब ६९ किमी दूर, कामशेत के पास है ह्य हम लोग अभी महाराष्ट्र के ऐनापुर मंदिर के लिए प्रयासरत हैं। अगर आप भी सहयोग देना चाहते हो तो कृपया इस मेल पक पर उत्तर दे। हम लोगो के प्रयास से तमिलनाडु में ४९ मंदिर जी के लिए कार्य प्रारम्भ भी हो गया है।

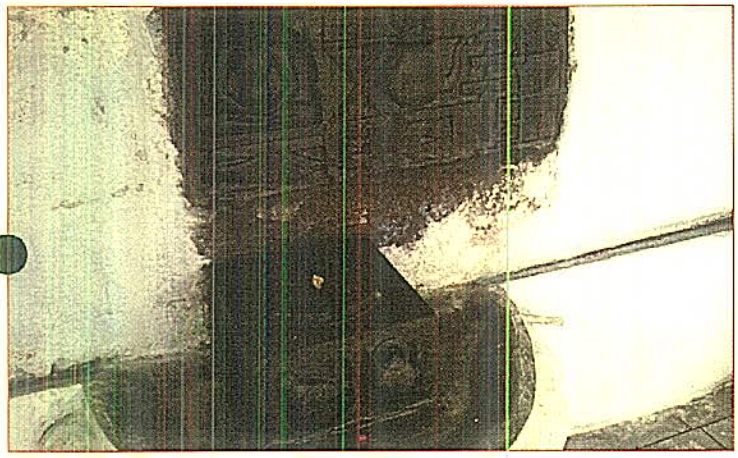

आज हम चलते हैं करँदे (पिन – ६०४४१०), यह आचार्य अकलंक स्वामी की तपोभूमि है, कहा जाता है की आचार्य अकलंक स्वामी का बौद्ध भिक्षुओं से यहीं वाद विवाद हुआ था, यही इनकी समाधी भी बनी हुई है, इस जगह को मुनिगिरी भी कहते हैं, क्योंकि एक समय यहाँ मुनियों का आना जाना निरंतर होता रहता था। यहीं पास ही के तालाब में निकलंक(आचार्य अकलंक स्वामी के गृहस्थ भाई) की भी में समाधि है। निर्माण समय – ८०६ से ८६९ के बीच पल्लव नरेश नन्दिवर्मन के द्वारा हुआ। विशेषरूप से पुरातत्व विभाग द्वारा १००००० के आसपास शिलालेख सरकारी तौर पर दर्ज किये हुए हैं, उनमे से करीब ९५००० जैन धर्म या श्रमण धर्म से ही सम्बंधित हैं, अगर आप के पास भी किसी दुर्लभ क्षेत्र की जानकारी और फोटो हो तो कृपया हमारी टीम को इस पते पर भेजें, ताकि हम दुसरों को भेज सकें, ताकि सभी को उसकी जानकारी मिल सकें। हम लोग अभी महाराष्ट्र के ऐनापुर मंदिर के लिए प्रयासरत हैं। अगर आप भी सहयोग देना चाहते हो तो कृपया इस मेल पर हमको लिखें। **jsptirthbachaye@gmail.com**

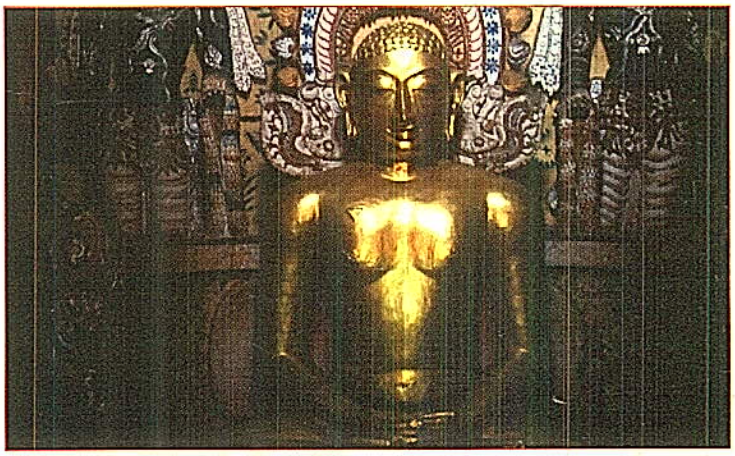

चन्दन-से महकते हैं घर

पहाड़ से गिरकर व्यक्ति उठ सकता है, लेकिन संस्कार से गिरा हुआ व्यक्ति कभी नहीं उठ सकता। वह माता-पिता धन्य हैं जो अपने बच्चों को सभा की अग्रिम पंक्ति में बैठने योग्य बनाते हैं। इंसान की खूबसूरती अपनी ओर क्षणिक आकर्षित कर लेती हैं, कुछ वर्षों बाद वह खूबसूरती गायब हो जाती है, लेकिन संस्कारों की खूबसूरती सदैव बनी रहती है। संस्कारों से जीव पूज्यता को प्राप्त होता है। ये संस्कार ही बच्चों में चारित्र निर्माण करते हैं। आज के बच्चे आगे चलकर समाज व देश के कर्णधार बनेंगे। इसलिए बड़ा जरूरी है कि बचपन में ही इन बच्चों को नैतिक और चारित्रिक संस्कार दिये जाएं। बचपन में सिखायी गयी बातें पूरे जीवनभर याद रहती हैं। आज की पाश्चात्य शैली में हम अपनी संस्कृति और मानवता के मुख्य सिद्धांत जो हमारे आचार्यों ने बताये हैं, भूल बैठे हैं। आधुनिक शैली में बच्चों को संस्कार देकर चारित्रवान बनाना प्रत्येक समाज का नैतिक दायित्व है। पंचकल्याणकों में हम करोड़ों रुपया खर्च करते हैं और भव्य मंदिर का निर्माण करते हैं जहां दर्शन कर हम जीवन को सम्यक बनाने की प्रेरणा लेते हैं। इसमें हम पत्थर की प्रतिमा में संस्कार डालते हैं। लेकिन संस्कार शिविरों में बचपन में हम जीवित आत्मा में संस्कार डालकर भगवान बनाते हैं। पंचकल्याणक कराकर हम मन्दिर निर्माण जरूर करें लेकिन बच्चों में संस्कार देने की परम्परा प्रत्येक मन्दिर में पाठशाला के रूप में होना, उससे भी जरूरी है। समाज का ध्यान इस अं. नहीं गया और गया है तो बहुत कम। संस्कार देना एक कला है। इसे विकसित किये जाने की बड़ी आवश्यकता है। संस्कारी आत्मा जीवनभर चन्दन की तरह सुगन्धित रहती है। वह सुगन्ध आसपास तक के वातावरण को भी सुगन्धमय करती है। दिल्ली में एक ऐसी संस्था है दिगंबर जैन नैतिक शिक्षा समिति जो प्रतिवर्ष 60-70 नैतिक शिक्षण शिविर मन्दिरों में आयोजन करती है। वह भी गरमियों की छुट्टियों में जब बच्चों पर लौकिक पढ़ाई का दबाव नहीं होता और छुट्टियां रहती हैं। ये एक-एक सप्ताह के होते है. इनकी अपनी बालबोध पुस्तकें हैं। दिन में गरमी हो जाती है, इसलिए प्रातः दो घंटे की कक्षाएं 5 वर्ष से लेकर 20 वर्ष तक के युवा बच्चे नैतिक शिक्षण शिविरों में शिक्षा लेते हैं। बड़े जन छहढाला पढ़ते है।

बच्चों के चारित्र निर्माण पर विशेष जोर दिया जाता है। इस समिति के पास लगभग 50 अध्यापकों का एक मण्डल है, जिन्हें मन्दिरों में आयोजित शिविरों में पढ़ाने भेजा जाता है। आयोजकगण बच्चों को नाश्ता भी कराते हैं और प्रत्येक बच्चों को प्रोत्साहन पुरस्कार देते हैं। दिल्ली में यह संस्था प्रत्येक वर्ष लगभग दस हजार बच्चों के चारित्र निर्माण की प्रेक्टीकल शिक्षा देती है। कहीं-कहीं तो एक शिविर में 500 छात्र-छात्राएं पढ़ते हैं। इन बच्चों को अनेक प्रतियोगिताओं के माध्यम से भी शिक्षित किया जाता है। दिल्ली व एनसीआर में इन्दिरापुरम, उस्मानपुर (पुस्ता), वसुन्धरा से.-10, सूर्य नगर, राजपुर रोड, बैंक एन्क्लेव, गांधी नगर, लक्ष्मी नगर (जवाहर पार्क), नवीन शाहदरा, छोटा बाजार (शाहदरा), त्रिनगर, ज्योति कॉलोनी, शास्त्री नगर, धर्मपुरा (गांधी नगर), कृष्णा नगर, रोहिणी से.3, गुलाब वाटिका, लक्ष्मी नगर (सुभाष चौक), कबूल नगर, शास्त्री पार्क, गोविंद विहार, शकरपुर (बी-40, बाहुबलि एन्क्लेव, रोहिणी से.9, भोगल, धर्मपुरा (चांदनी चौक), सुन्दर विहार, शंकर नगर, ग्रीन पार्क, कविनगर (गाजियाबाद), पार्श्व विहार, बलराम नगर, राम नगर, अशोक नगर, रोहिणी से.7 सनराइज अपार्ट, ऋषभ विहार, सादतपुर, गंगा विहार, दिलशाद गार्डन, सूरजमल विहार, रोहिणी से.13 बल्लभ विहार, डिप्टीगंज, कैथवाड़ा पुस्ता, पहाड़गंज, दरियागंज, चन्द्रलोक, बिहारी कॉलोनी, भोलानाथ नगर, राजगढ़, कैलाश नगर गली नं.12, कैलाश नगर गली नं.2, पटपड़गंज, रोहिणी सेक्टर-14 (प्रशान्त विहार), विवेक विहार, फरीदाबाद से.16 तथा मेरठ में महावीर जयंती भवन, माधोपुरम, तीरघरान, सदर, जैन बोर्डिंग हाउस में करीब 65 शिविर लगाए गए।

शिविर लगे हैं। इन बच्चों को प्रारंभ से ही विनय वात्सल्य के भाव से चारित्र निर्माण किया जाता है। प्रत्येक बच्चे को सात नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है। (1) प्रातः उठते ही णमोकार मंत्र का जाप, (2) बड़ों के चरण स्पर्श (लड़के), लड़कियां जय जिनेन्द्र, (3) नहा-धोकर देव दर्शन (4) पानी छानने की विधि व छना पानी ही पीना, (5) शुद्ध रसोई का खाना (जिसमें जूते-चप्पल नहीं जाते हों), (6) रात्रि भोजन का त्याग, (7) सोते समय पुनः णमोकार मंत्र का जाप।

ये संस्कार नियम घर-घर को चन्दन की तरह सुगन्धित रखते हैं। आइये हम सुगन्धित हो, हमारा समाज सुगन्धित हो, हम सब समाज ऐसे आयोजनों को करें और देश व समाज उन्नायक बने। हमारे तीर्थों की पवित्रता, विकास, संरक्षण इन्हीं के कन्धों पर निर्भर है।

- श्री किशोर जैन
मो. : 9910690823

क्रिया सहित धर्म कभी निष्फल नहीं होता।

महानता अहं में नहीं, विनय में होती है

ब्रह्मचारी संदीप 'सरल'

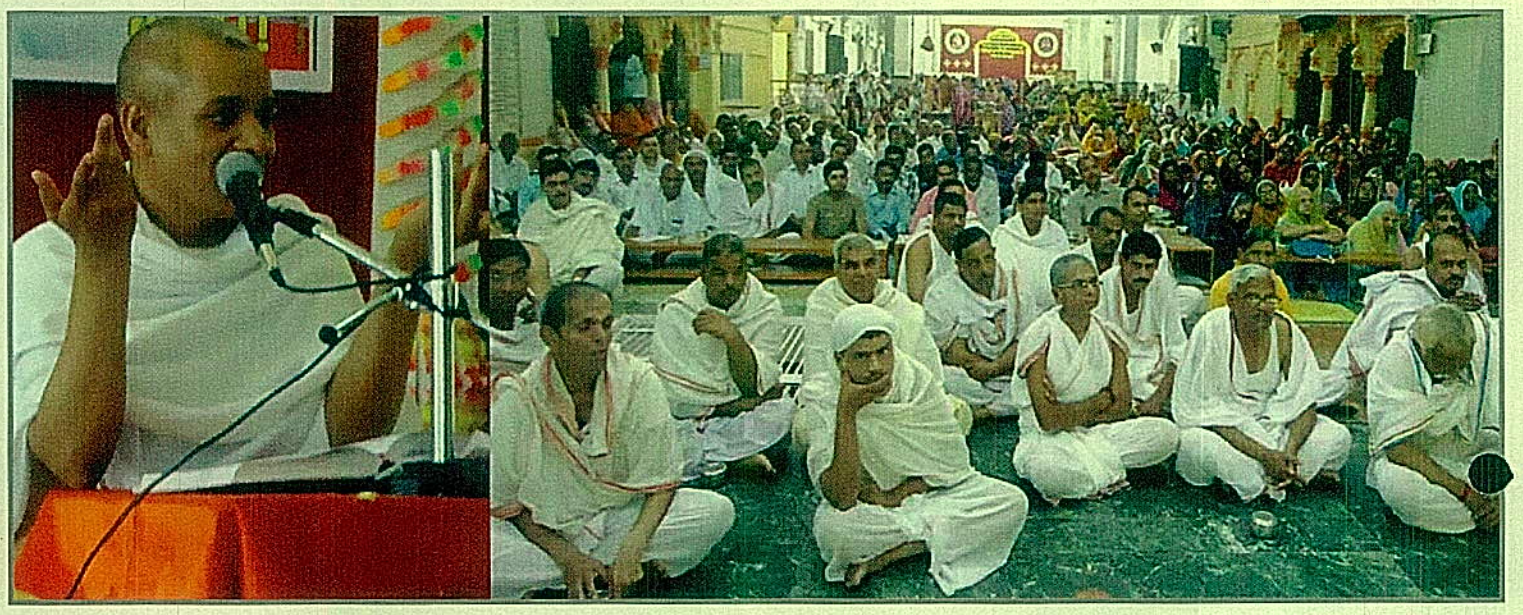

खुरई। अतिशयकारी नवीन जैन मंदिर में आयोजित होने वाले संस्कार शिविर के आठवें दिवस पर शिविरार्थियों की परीक्षा के उपरांत ब्रह्मचारी संदीप भैया ने विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि उत्तम प्रकृति का व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को ओछा बनाकर नहीं चलता। वह अपने अंतःकरण को विशाल बनाकर रखता है। स्व के समान पर के सम्मान का भी ध्यान रखता है। व्यक्ति की महानता अहं से नहीं, विनय से प्रकट होती है। जो जितना गुणवान होता है वह उतना ही ज्यादा विनयवान होता है।

भैया जी ने कहा कि मां के उदर में शिशु गर्भस्थ है इसका ज्ञान शिशु के रोने से नहीं, अपितु उदर की वृद्धि से स्वतः हो जाता है। इसी प्रकार गुणी–विनयवान के नारों से गुणी की पहचान नहीं होती अपितु उसके द्वारा विनय, वात्सल्य, मैत्री आदि क्रियाएं करने पर स्वतः मालूम चल जाता है कि वह गुणी है। धर्मात्मा का सर्वगुणों में प्रधान गुण विनय–गुण है। विनयी सर्वगुण संपन्न हो सकता है, अविनयी प्राप्त गुणों को भी अहं में डूबकर नष्ट कर लेता है। विनय से विहीन व्यक्ति का ज्ञान विज्ञान सब निष्फल है जबकि विनयी का अल्पज्ञान भी सर्वसिद्धिदायक है।

विचारों की पवित्रता से चारित्र की रक्षा –

भैया जी ने कहा कि खोटे संस्कार इस जीव के अंदर अनादिकाल से है। मन की दौड़ भी शीघ्र उसी ओर होती है। जब हम मन को कुकृत्यों की ओर ले जाते हैं तभी तो जाता है। मन किसी विषय में अपनी हठ नहीं करता। इन्द्रियां अपने–अपने विषय की इच्छा तो करती हैं पर बलात तो नहीं। उपादान की कमजोरी जहां होती है वहां इंद्रियां। मन व अन्य बाह्य निमित्त कार्यकारी हो जाते हैं परंतु यदि उपादन दृढ़ हो और पूर्ण संकल्प हो तो संसार में कोई शक्ति ऐसी नहीं है जो चारित्रधारी नरसिंह को चलायमान कर सके। जीव के अंदर जो कमजोरी बैठी है देखो तो वह क्या है। जीव कैसा अनुभव करता है वही भावना विषयों की भट्टी में डाल देती है। जिसे चरित्र की रक्षा करना है उसे अपने विचार पवित्र रखने होंगे।

शाकाहार के प्रचार प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने वाले

अशोक 'शाकाहार' का हुआ सम्मान

51 हजार सम्मान निधि की भेंट

किशनपुरा(निप्र)- विगत चार दशक से भी अधिक समय से मुनिश्री क्षमासागर जी के आशीर्वाद से संचालित अखिल भारतीय शाकाहार परिषद के प्रदेश अध्यक्ष की महती भूमिका का निर्वाह करने वाले हजारों लाखों मूक पशुओं एवं गौ रक्षा के लिए समर्पित अशोक 'शाकाहार' का सम्मान पी.एस.जे. परिवार की ओर से ५१हजार की सम्मान निधि एवं श्रीफल, शाल, प्रतीक चिह्न देकर किया गया। ईशुरवारा समिति के अध्यक्ष देवेन्द्र सेठ ने तिलक लगाकर सम्मान किया। अशोक शाकाहार ने उक्त सम्मान निधि को गौशाला के लिए दान में समर्पित की।

सरलता, सादगी और सद्भावना ही जीवन का सही धर्म है।

1008 भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक मनाया निर्वाण लाडू चढ़ाया

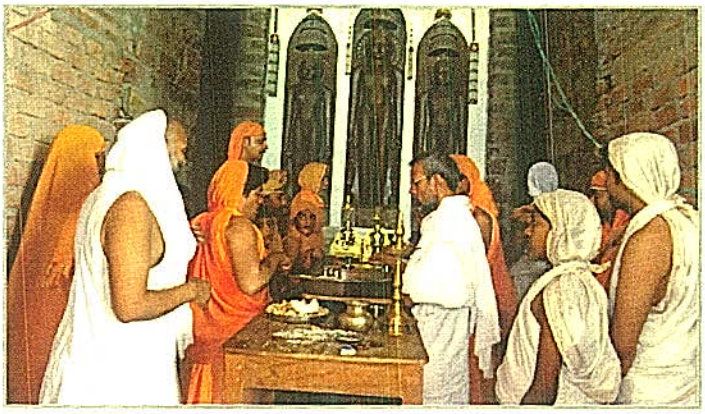

किशनपुरा(निप्र)– अतिशय क्षेत्र ईशुरवारा में विराजमान मुनि श्री अजित सागर जी महाराज, ऐलक श्री विवेकानंद सागर जी महाराज के सानिध्य एवं बाल ब्रम्हचारी अविनाश भैया जी के मार्ग दर्शन में अतिशय क्षेत्र ईशुरवारा में विराजित ५०० वर्ष प्राचीन अतिशयकारी भगवान शांतिनाथ का जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक मनाया गया। प्रात: कालीन बेला में सर्व प्रथम भगवान शांतिनाथ का महामस्तकाभिषेक संपन्न हुआ तद्उपरांत सैकड़ों श्रद्धालुओं ने निर्वाण लाडू चढ़ाए। महामस्तकाभिषेक करने का सौभाग्य सौधर्म इंद्र पी.एस.जे. परिवार बेगमगंज, अनंदी मासाब ईशुरवार, ब्रम्हचारिणी किरन दीदी सागर, ब्रम्हचारिणी क्रांति दीदी ईशुरवारा एवं ब्रम्हचारिणी शुभ्रा दीदी खुरई वालों के परिवार को प्राप्त हुआ।

सम्मान समारोह हुआ आयोजित

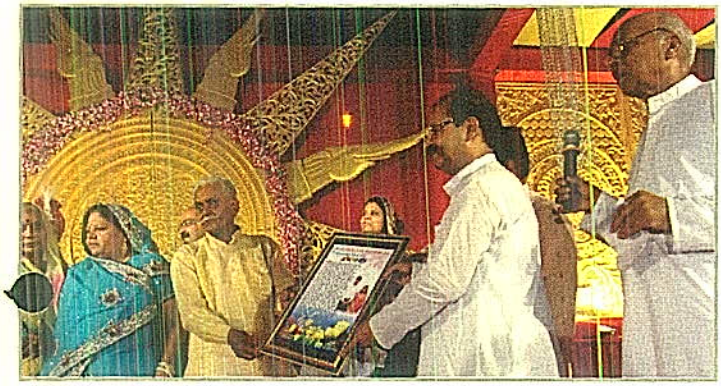

किशनपुरा(निप्र)– पंचकल्याणक महामहोत्सव एवं १०८ दिवसीय शांतिनाथ विधान में सहयोग करने वाले श्रद्धालुओं, कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों का सम्मान ईशुरवारा क्षेत्र के अध्यक्ष देवेन्द्र सेठ एवं पी.एस.जे. परिवार बेगमगंज ने श्रीफल शाल एवं प्रतीक चिह्न देकर किया। सम्मान प्राप्त करने वालों में सुकमाल जैन, प्रदीप नायक, राकेश नन्ना, मनोज सिंघई जरूवाखेड़ा, गौतम जैन ईशुरवारा, राहुल बड्डे खुरई, सुधीर मोदी, सुधीर गुरहा, आदीश जैन खुरई एवं सागर के प्रकाशचंद जी बहेरिया, ऋषभ बांदरी आदि प्रमुख है।

कत्लखाना एवं माँस निर्यात पर प्रतिबंध लगना जरूरी : मुनिश्री अजित सागर

किशनपुरा(निप्र)– भगवान शांतिनाथ के जन्म, तप एवं मोक्ष कल्याणक पर विशाल धर्म सभा को संबोधित करते हुए मुनि श्री अजित सागर जी महाराज ने नरेन्द्र मोदी की ताजपोशी पर आशीर्वाद देते हुए कहा कि अब हमारे राष्ट्र से अबिलम्ब माँस निर्यात बंद होना चाहिए एवं कत्लखानों पर प्रतिबंध लगना चाहिए। इसके साथ ही संपूर्ण राष्ट्र में गुजरात की तर्ज पर ही शराब के उत्पादन एवं बिक्री पर रोक लगना चाहिए। मात्र इतना करने से ही हमारा राष्ट्र एक बार पुन: सोने की चिड़िया के नाम से संपूर्ण विश्व में विख्यात हो जायेगा। हम विकसित राष्ट्र की परिधि में आ जायेगे। अंग्रेजों के शासनकाल में कत्लखानों की संख्या १००० थी। आज आजाद भारत में आधुनिक ३६ हजार के करीब कत्लखाने हैं। प्रतिदिन लाखों की संख्या में गौवंश एवं

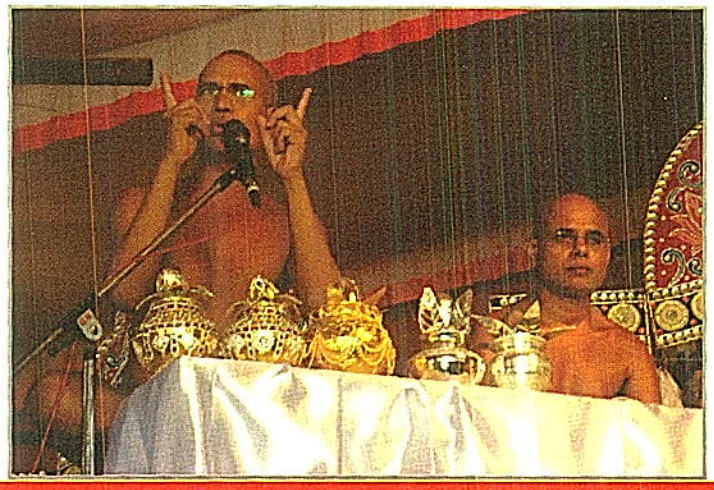

पशुधन का संहार हो रहा है। देश से अंग्रेज तो गये, लेकिन देश में हिंसा की नीति को छोड़ गये। अभी कुछ दिनों पहले एक सर्वे में आया था कि सिर्फ एक दिन में ५० हजार और १ मिनिट में २१०० गौवंश को मौत के घाट उतार दिया जाता है। इस तरह यदि पशुधन नष्ट होता रहा तो एक सर्वे में लिखा था २०३० तक लोग फिर गाय की कहानी सुनकर विश्वास करेंगे कि गाय ऐसी होती थी। गाय का वंश ही समाप्त हो जायेगा।

मुनिश्री ने कहा कि विदेशी धन की चाह में आज पशुओं का कत्ल हो रहा है तो एक ऐसा भी दिन आयेगा जब मनुष्यों का भी कत्ल पशुओं की तरह होने लगेगा। आज हमारे देश में नेता और नागरिकों में थोड़ी से करूणा जागृत हो जाये तो देश के सारे पशुवध गृह यानि कत्लखाने आसानी से बंद हो जायेंगे। यांत्रिक कत्लखाने फिर एक विशाल गौशाला का रूप ले लेंगे। आज देश को गांधी जैसे महान व्यक्तित्व और भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण, महावीर, ईसामसीह जैसी करूणा की आवश्यकता है। तब ही हमारा पशुधन संरक्षण का कार्य हो पायेगा। अहिंसामयी भारत में आज नेता तो बहुत हैं लेकिन अहिंसा का पक्ष लेने वाले नेता और पार्टी कोई नहीं है। सत्ता का सुख एक ऐसा सुख है जिसे मिलता है, वह सब भूल जाता है कि हमने चुनाव पूर्व जनता से वादा किया था कि हम पशुवध को रूकवायेंगे, लेकिन सत्ता में आने के बाद सब भूल जाते हैं। हाल ही में मोदी युग का प्रदुर्भाव हुआ है, भारतवर्ष के समस्त अहिंसक समाज को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी से बहुत आशाएं हैं। भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए माँस निर्यात पर प्रतिबंध, बूचड़खाना बंद करने एवं संपूर्ण भारत में शराब के बिक्रय एवं उत्पादन पर प्रतिबंध लगना निहायत जरूरी है।

मुनि संघ का हुआ विहार

किशनपुरा(निप्र)— लगातार चार माह से भी अधिक समय से अतिशय क्षेत्र का सर्वागीण विकास करने में विशेष आशीर्वाद प्रदान करने वाले मुनि श्री अजित सागर जी महाराज एवं ऐलक श्री विवेकानंद सागर जी का विहार आज दिनांक २७मई दिन मंगलवार को सागर की ओर हो गया। अशोक शाकाहार ने बताया कि मुनि संघ रात्रि विश्राम मानक चौक में करेंगे। कल आहार चर्या के उपरांत वह सागर की ओर प्रस्थान करेंगे। ६, ७, ८जून को वर्धमान कालोनी सागर में आयोजित वेदी प्रतिष्ठा, यागमंडल विधान एवं कलशारोहण के भव्य आयोजन में मुनि संघ के शिरकत करने की प्रबल संभावना है।

निवेदन

देश के प्रमुख जैन विद्वानों / तीर्थ भक्तों से निवेदन है कि आगामी अंक में हम भगवान सुपार्श्वनाथजी से संबंधित जानकारी देना चाहते हैं। कृपया अपना आलेख, संबंधित तीर्थ परिचय एवं आकर्षक फोटोग्राफ्स भिजवाकर हमें सहयोग प्रदान करने की कृपा करें।

- संपादक

SAHU JAIN TRUST

A philanthropic organisation Founded By

SMT. RAMA JAIN & SAHU SHANTI PRASAD JAIN

Announces the 2014-2015 need-cum-merit based

EDUCATIONAL SCHOLARSHIPS

In the following categories

Non Refundable Scholarship - for pursuing Graduation and Post Graduation in all subjects

Existing recipients of scholarship will have to apply again for continuance

Scholarship amount ranges from Rs. 150/- to Rs. 1,000/- per month.

These are strictly for technical subjects like Engineering, Infotech, Medical, MBA etc. to be undertaken by graduates / post graduates in India.

Last date for obtaining Application Forms -20.7.2014Last date for receipt of Completed Forms by the Trust - 30.7.2014 Application Forms will be available free of charge or can be had by post by sending a 9"x4" self addressed stamped (Rs. 10/-) envelope to the **Secretary, Sahu Jain Trust, 18, Institutional Area, Lodhi Road, New Delhi – 110 003**

Note: Forms can also be downloaded from our site : www.sahujaintrust.timesofindia.com/Inland Scholarship

GOVERNMENT OF TAMIL NADU

DEPARTMENT OF MINORITIES WELFARE

807 (5th Floor), Anna Salai, CHENNAI - 600 002

Tele: 044-28520033,28523544, Fax:044 28544545 Email:tnmwpms@gmail.com

POSTMATRIC SCHOLARSHIP TO MINORITY STUDENTS FOR THE YEAR 2014-15

Under the Prime Minister's New 15 Point Programme, the Ministry of Minority Affairs (GOI) has launched Postmatric Scholarship Scheme to the Minority students pursuing **studies from XI,XII, ITI, ITC affiliated courses NCVT classes at XI & XII level, Polytechnic, Diploma in Nursing, Teacher Training, Under Graduate, Post Graduate Courses, M.Phil, Ph.D level** Courses in the **Government, Government Aided and all Recognised Private Institutions.** Applications are invited from the minority students belonging to **Muslim, Christian, Sikh, Buddhist, Zoroastrian (Parsis) & Jain** communities as notified by the Government of India, for Postmatric Scholarship (Fresh and Renewal) for the year 2014-15 through online. Community wise number of fresh scholarship allotted to Tamil Nadu are as follows.

Muslims	Christians	Sikhs	Buddhists	Jains	Parsis	TOTAL
8961	9772	25	14	215	2	18989

ELIGIBILITY : a) The students who have secured not less than 50% marks (or) equivalent grade in the previous final examination. b) Annual income of parents/guardian from all sources should not exceed Rs.2 lakh for **Fresh Scholarship.** c) Students who have been awarded **Fresh Scholarship** in the previous year by this department should apply for **Renewal Scholarship** provided if he/she scored not less than 50% of marks in the previous year examination without any arrears.

Other Conditions :

(I) Scholarship will not be given to more-than two students in a family (ii) The students should be regular in attendance for which the yardstick will be decided by the competent authority of the school/college/university iii) The student obtaining benefits under this scholarship scheme shall not be allowed to avail of benefits under any other scholarship such as scholarship from BC/MBC/Adi-Dravidar Welfare, Education Departments, any other Boards etc.,for the same purpose.

HOW TO APPLY : The students should apply only through online.

The student can log on in the website **www.momascholarship.gov.in** and select POST MATRIC SCHOLARSHIP. He / She can select the Tab **"Students Registration"** and then Register his / her application through ONLINE for Fresh / Renewal scholarship by filling up requisite details in the online application. Then he/she can click **"SAVE"** button followed by **"FORWARD"** button. When this process is completed a temporary ID will be generated to the Student and the application will be forwarded to the Institution through online. However, the student **must take printout of the filled in online application** without fail and should submit the same along with the required documents to the Educational Institution.

2. While entering basic parameters like religion, name of the institution, percentage of marks, parental annual income and bank details students are requested to take atmost care on this **as these details cannot be edited further at any level.**

List of documents to be submitted to the Educational Institution along with the application by the student:

1. Filled in **ONLINE application** form (Fresh/Renewal) affixed with recent passport size photograph.
2. Attested copy of **Marksheet** (Consolidated Marksheet only) for fresh scholarship. In respect of Renewal Scholarship Previous year Marksheet should be enclosed. If Marksheet is not received within due date, then online printout of Mark sheet with due attestation from HOD will be accepted.
3. Attested copy of Community Certificate or **declaration of religion** by way of an affidavit on non judicial stamp paper with a value of Rs.10/-

ज्ञान एक ऐसा धन है, जो मन को भी अपने वश में कर लेता है।

4. **Income certificate** obtained from the Revenue Authority (or) an income declaration by the self-employed parents/guardians, stating definite income from all sources by way of an affidavit on non-judicial stamp paper with a value of Rs.10/-. Employed parents/guardians are required to obtain income certificate from their employer and for any additional income from other sources, they should furnish declaration by way of an affidavit on non-judicial stamp paper with a value of Rs.10/-
5. Any one of the documents like Ration Card, Voter ID, PAN Card, Passport as **address proof**
6. **Fee receipts** issued by the Institution as proof for payment of Tuition fee, Library fee, Examination fee & Other non refundable fee.
7. Clear **copy of Bank pass book** or copy of cancelled cheque leaf as proof for Bank Account Number (Core Banking Service) and IFS Code (11 digits) of the student bank details.
8. A **receipt in acknowledgement** of previous year scholarship (2013-14) on the form attached to the application duly counter-signed by the Head of the Institution concerned, if the applicant was in receipt of a scholarship under this scheme in the preceding year.
9. If the student is a hosteller then **hostel fee receipt** should be enclosed or a declaration by institution that the student is a hosteller

Schedule of Time Limit

	Fresh	Renewal
i) Last Date for submission of Online application to the Institution by the Student with relevant enclosures	15.09.2014	10.10.2014
ii) Last Date for Scrutiny & forwarding of application by the Institution to the District Backward Classes & Minorities Welfare Officer (DBC & MWO) at Collectorate of their District	25.09.2014	20.10.2014
iii) Last date for completion of scrutiny and submission of proposals by the DBCWO to the Commissionerate	05.10.2014	31.10.2014

IMPORTANT INSTRUCTIONS TO INSTITUTIONS

1. The Head of the Educational Institution is requested to ensure that the name of their Institution have been registered in the above website. If not registered so far, they have to send the requisition to the concerned District Backward Classes and Minorities Welfare Officer at District Collectorate with proof of affiliation of the Institution, the name of University, details of the Courses offered, Address of the Institution, Phone No., Fax No., email ID, Mobile Nos. of the Principal / Dean and staff who is dealing with scholarship scheme to the undersigned for enrolment. Necessary user ID and Password will be sent to the Institution through email/SMS after enrolment of the Institution. Once User ID & Password (temporary) are received by the Institution they have to immediately change the password of their own and to upload the courses offered, yearwise fee structure, Bank Account No. (Core Bank Service) with IFS Code (11 digit) etc., of the Institution for further process.
2. Online applications not verified by the Institutes and pending for more than 30 days will be automatically pushed to the District Office of State Department. Hence, Institutions are requested not to wait for the last date for receipt of application to commence the process of verification. The institute is advised to take up verification as soon as the online application and hard copy of the application are received from the students.
3. If the fee amount entered by the student is incorrect, Institution shall edit and enter correct amount.

Website : Name of the Institution registered, Scheme details, online application etc are available in the website **www.momascholarship.gov.in**

DIPR/ 485 /DISPLAY/2014

COMMISSIONER OF MINORITIES WELFARE

चिलकाना गौरव और जैन समाज के श्रद्धा पुंज; बाबू त्रिलोकचन्द्र जी का महाप्रयाण : जैन समाज की एक अपूरणीय क्षति

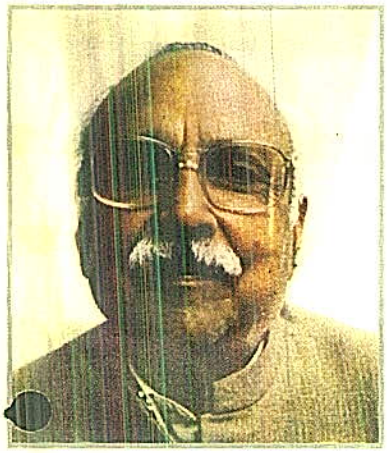

पुण्य-श्लोक बाबू त्रिलोक चन्द्र जी मात्र चिलकाना (सहारनपुर) जनपद के ही नहीं, प्रत्युत पूरे भारत में गृहस्थ रूप में प्रतिष्ठित ऋषि रूपी महामानव थे और थे एक बहु-आयामी व्यक्तित्व के धनी; जो मृत्यु के साथ संघर्ष करते हुए, इस जीवन की यात्रा पूरी कर, हमारे मध्य से दिनांक 22 मई, 2014 को चले गये। दिनांक 6 मई, 1921 को आविर्भूत हुए परम श्रद्धेय त्रिलोकचन्द्र जी साहब ने अपने पिता यशःपूत श्री गिरधारीलाल जी जैन के संस्कारों को अपने विशाल और विराट व्यक्तित्व में समाहित ही नहीं किया था, प्रत्युत सबके दिलों में संत-स्वरूप में अवस्थित हो, जन-जन के दिल में पूजनीय स्थान बनाए रखने में भी सफलता सम्प्राप्त की थी। उनका मानना था कि सभी लोगों को जीवन जीने के लिए आवश्यक बुनियादी सुविधाएं मुहैया कराने में सहयोग देना सबसे बड़ा धार्मिक उपक्रम है और अपने पूरे जीवन-काल में इस चिंतन को वे मूर्त रूप देते रहे- साथ ही इस प्रेरक संदेश का जन-जन के बीच सफलता के साथ सम्प्रेषण भी करते रहे। उनकी इस उदार सोच और उदात्त चिंतन की फलश्रुति थी कि मात्र जैन समाज ही नहीं, प्रत्युत वे विभिन्न मान्यताओं एवं धर्मों में विश्वास रखने वाले लोगों के प्रेरणा स्रोत बन गए। वे न जाने कितने जिनालयों, वाचनालयों, सामुदायिक केन्द्रों, पाठशालाओं और धर्मशालाओं के निर्माण के प्रेरक निमित्त रहे। उनके अवधान में चिलकाना में निर्मित दिगम्बर जैन मंदिर में विराजित चतुर्थकालीन भगवान पार्श्वनाथ की सुन्दर मनोहारी प्रतिमा आज भी लोगों को परम आत्मिक शांति का अनुभव करती है। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरलादेवी जी जैन ने भी उन्हीं के पद-चिह्नों पर चलकर अभूतपूर्व धर्म-प्रभावना की।

सात्विक जीवन, सदाचार, वीतराग-जान का आत्मोकर्षी सहयोग और अर्जन से अधिक विसर्जन का पावन संदेश; उनके तीनों पुत्रों और पुत्रियों के जीवन के लिए प्रेरणा-पाथेय बना। उनकी यशःपरम्परा की सबसे समर्थ संवाहिका उनकी सुपुत्री श्रीमती सरिता जैन हैं, जो भारतवर्ष की सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज को एक प्रेरक और ऊर्जस्वी नेतृत्व प्रदान कर रही हैं।

श्रद्धापुंज बाबू त्रिलोकचन्द्र जी के निधन से उत्पन्न संकट की घड़ी में, उनका संदेश हमारा सम्यक मार्गदर्शन करता रहेगा, हमें प्रकाश के उत्स की ओर प्रवृत्त करता रहेगा और करता रहेगा अंधकार से दूर भी। ऐसे ज्येष्ठ, अनुभवी एवं तपःपूत धर्मनिष्ठ, आचारनिष्ठ पूर्ण सुधी साधु-पुरुष को हम विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनकी पवित्र आत्मा को सद्गति प्राप्त हो; परिवार-जनों को इस अनभ्र वज्रपात को सहन करने का साहस और संबल मिले- यही वीतराग प्रभु के चरणों में प्रार्थना है।

- विनोद बाकलीवाल, मैसूर
राष्ट्रीय मंत्री- भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी

श्री कन्छेदीलाल सिंघई, दमोह नहीं रहे

यह जानकर दुःख हुआ कि कुण्डलपुर क्षेत्र (दमोह) के अध्यक्ष श्री सन्तोषकुमार जी सिंघई के पूज्य पिता श्री कन्छेदीलाल सिंघई का 8 मई 2014 को नेमावर क्षेत्र में निधन हो गया। नेमावर में आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज संघ सहित विराजमान हैं। वहां उन्हें यह आभास होने लगा था कि उनका अंतिम समय नजदीक है इसलिये वे आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की शरण में चले गये। **वहीं उन्होंने आचार्य श्री के सान्निध्य में, नेमावर की पावन भूमि में सल्लेखना पूर्ण मरण प्राप्त किया।**

श्री कन्छेदीलालजी के जीवन में अपार संतोष था। भगवान ने उन्हें इतना दिया है कि आंचल में न समाये। कुण्डलपुर के बड़े बाबा के दर्शन के लिये सदैव लालायित रहते थे। 31 अगस्त 1925 को श्री बालचंदजी सिंघई एवं महारानी की कोख से जन्में श्री कन्छेदीलालजी धर्मनिष्ठ, मुनिभक्त, समाजसेवी, सरल स्वभावी, गम्भीर व्यक्तित्व के धनी थे। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के अनन्य भक्त थे। उनके निधन से जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी महापरिवार दिवंगत आत्माओं के प्रति अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके शोक संतप्त कुटुम्बीजनों को यह अपार दुःख सहन करने की शक्ति मिले, ऐसी वीर प्रभु से प्रार्थना करता है।

बोलना स्वर्ण है किन्तु मौन स्वर्ण से निर्मित आभूषण है ।

।। श्री मुनिसुव्रतनाथाय नमः ।।

।। आचार्यश्री शान्तिवीरशिवधर्माजितवर्धमानसागरेभ्यो नमः ।।

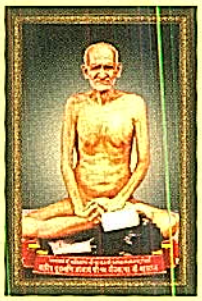
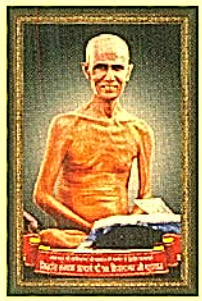
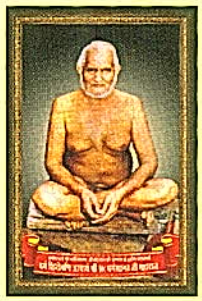
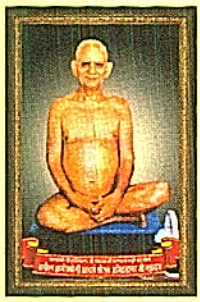

वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्यश्री 108 वर्धमानसागरजी महाराज का

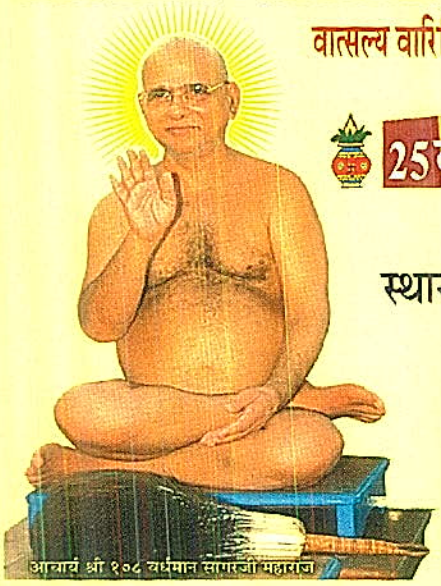

25वाँ आचार्य पदारोहण रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव

दिनांक 25 जून से 29 जून 2014

स्थान : मदनगंज-किशनगढ़ (जिला-अजमेर) राजस्थान

महोत्सव के सुरभित पुष्प

- 25 जून — उदय उत्सव
- 26 जून — श्रुत उत्सव
- 27 जून — सद्भावना उत्सव
- 28 जून — अर्चना उत्सव
- 29 जून — अभिनन्दन उत्सव

हमारे असीम पुण्योदय से वर्तमान शासन नायक तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी द्वारा उपदिष्ट तथा गौतमादि गणधर प्रभृति कुन्दकुन्दाचार्य पर्यन्त अनुपालित निर्ग्रन्थ श्रमण परम्परा के बीसवीं सदी में निर्मल प्रवाहक एवं पुनरुद्धारक, प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती, अध्यात्म योगी, परम तपस्वी महामुनि, परम पूज्य आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की अक्षुण्ण बाल ब्रह्मचारी पट्ट-परम्परा के सफल सारथी वर्तमान पट्टाधीश, वात्सल्य वारिधि, जिनधर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्यश्री वर्धमानसागरजी महाराज के 25वें आचार्य पदारोहण दिवस के पावन अवसर पर विनय-श्रद्धा-भक्ति के सुरभित सुमन समर्पण के रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव को मनाने का मंगलमय प्रसंग प्राप्त हुआ है।

आपसे सादर निवेदन है कि महामहोत्सव के इन पुनीत क्षणों में सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित हमारे नगर मदनगंज-किशनगढ़ में अवश्य पधारें।

निवेदक :
श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत
मदनगंज-किशगढ़

विनीत :
सकल दिगम्बर जैन समाज
मदनगंज-किशनगढ़

आयोजक : वात्सल्य वारिधि जिनधर्म प्रभावक आचार्यश्री वर्धमानसागर आचार्य पदारोहण रजत कीर्ति चारित्र महोत्सव समिति

सम्पर्क सूत्र : 094141 74888, 098290 71442, 098299 42177
093397 56995, 094141 35314, 096940 11588

E-mail :
mahotsavrajatjayanti@gmail.com